गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

हिन्दी अध्ययन केंद्र
भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान
गांधीनगर- 382030

गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF GUJARAT

एम.ए. हिन्दी अधिगम

अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना

(LOCF)

हिन्दी अध्ययन केंद्र

**(16 जनवरी 2020 को आयोजित अध्ययन मण्डल की बैठक में अनुमोदित तथा
31 जनवरी 2020 को आयोजित अकादमिक परिषद की 22 वीं बैठक में कार्यसूची क्र. 12 के अंतर्गत स्वीकृत।)**

अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना

एम. ए. (हिंदी)

कार्यक्रम अधिगम परिणाम

(Programme Outcome)

सीखने के परिणाम आधारित पाठ्यक्रम रूपरेखा (LOCF) का उद्देश्य छात्रों को ज्ञान, कौशल, मूल्य, दृष्टिकोण, नेतृत्वक्षमता से समृद्ध और आजीवन सीखने में समर्थ बनाना है| परिणाम आधारित पाठ्यक्रम की रूपरेखा (LOCF) का मौलिक आधार यह विनिर्दिष्ट करना है कि अध्ययन के किसी विशेष कार्यक्रम को पूरा करने वाले परास्नातक अध्ययन के अंत में किस प्रकार से सक्षम होंगे| इस पद्धति के माध्यम से छात्र 21वीं सदी की जरूरतों के अनुरूप विभिन्न कौशलों को सीखने के साथ आलोचनात्मक विवेक, समस्या के समाधान की समझ, विश्लेषणात्मक तर्क, संज्ञानात्मक कौशल से समृद्ध होंगे|

भाषा केवल अभिव्यक्ति एवं संपर्क का माध्यम ही नहीं है बल्कि वह सामाजिक सोच, सामासिक संस्कृति और सामूहिक मानसिकता के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भारत जैसे एक बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश की राजभाषा एवं संपर्क भाषा होने के साथ-साथ हिन्दी विभिन्न भाषा-भाषी समाजों और संस्कृतियों के बीच अंतः संवाद का माध्यम भी है। गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय का हिन्दी अध्ययन केन्द्र शैक्षिक एवं सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ उपेक्षित समूहों को केन्द्र में लाने की प्रक्रिया में हिन्दी भाषा एवं साहित्य की भूमिका को महत्वपूर्ण मानता है। विगत दशकों में रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी के विद्यार्थियों के लिए विकसित हुए नये अवसरों को ध्यान में रखकर हिन्दी अध्ययन केन्द्र ने अपने पाठ्यक्रमों में स्त्री, दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक तथा हाशिये के समाज पर केंद्रित साहित्य की विविध विधाओं, आधुनिक साहित्य सिद्धांतों, तुलनात्मक साहित्य, लोक साहित्य, संस्कृति, सिनेमा, प्रयोजनमूलक हिन्दी, अनुवाद एवं मीडिया अध्ययन आदि विषयों पर विशेष जोर दिया गया है |

साहित्य स्वाभाविक रूप से अपने विद्यार्थियों अथवा पाठकों को न केवल जीवन के विभिन्न रसों का आस्वाद कराता है बल्कि उन्हें संपूर्ण मनुष्य बनाने में भी सहायता करता है| कार्यक्रम अधिगम आधारित पाठ्यक्रम संरचना की दृष्टि से स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्य महत्वपूर्ण हैं;

1. व्यावहारिक प्रशिक्षण
2. रोजगारपरक पाठ्यक्रम का निर्माण
3. विवेचन और विश्लेषण की क्षमता का विकास
4. संप्रेषण कौशल का विकास
5. पाठ योजना, परियोजना और शोधपरक लेखन की योग्यता का विकास|
6. रिपोर्ट, आलेख, रचनाएँ तथा व्यावसायिक लेखन का विकास|
7. मीडिया के विभिन्न क्षेत्रों के लिए कौशल निर्माण हेतु पाठ्यक्रम का निर्माण|

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम का उद्देश्य
(Programme Specific Outcome)

1. एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम का उद्देश्य निम्नांकित लक्ष्यों को प्राप्त करना;

1.1 विद्यार्थियों को संवेदनशील नागरिक बनाना|
1.2 समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना|
1.3 राष्ट्रीय चेतना का विकास करना|
1.4 मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना|
1.5 साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही अर्थों को बताना|
1.6 मूलभूत कौशल जैसे लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति का विकास करना|
1.7 स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के विशिष्ट साहित्य से परिचित कराना|
1.8 भाषा संबंधी कौशल का विकास करना|
1.9 उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही-सही ज्ञान कराना|
1.10 समाज के विभिन्न वर्गों एवं समुदायों के प्रति सहिष्णुता की भावना का विकास करना|
1.11 विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी देना|

2. हिन्दी विषय के अध्ययन से निम्नलिखित लक्ष्यों को प्राप्त करना;

2.1 हिंदी साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के संबंध में पर्याप्त जानकारी मिल सके| साहित्य के विभिन्न रूपों, विधाओं, कालखंडों और आंदोलनों की जानकारी देना, उनके बारे में चर्चा करना|

2.2 विभिन्न साहित्यिक और समीक्षात्मक अवधारणाओं को समझने की योग्यता|

2.3 पाठ को गंभीरतापूर्वक पढ़ने की योग्यता|

2.4 विभिन्न विधाओं के तथ्य, ऐतिहासिक संदर्भ को जानने की योग्यता|

2.5 भाषा वैज्ञानिक और शैलीगत विविधताओं को समझने की योग्यता |

2.6 विभिन्न प्रायोगिक सरंचनाओं की सहायता से पाठ विश्लेषण और पाठालोचन की योग्यता|

2.7 सामाजिक, धार्मिक, क्षेत्रीय, लैंगिक, राजनैतिक और आर्थिक संदर्भों में साहित्य को जानने की योग्यता|

2.8 विभिन्न संदर्भों में प्रश्नाकुलता की योग्यता|

2.9 साहित्य को पढ़ने के उपरांत समीक्षात्मक दृष्टि से स्थानीय और वैश्विक संदर्भों को जानने की उत्सुकता का विकास|

2.10 भारतीय मानकों और संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में साहित्य को जानने, समझने और विश्लेषण करने की योग्यता|

2.11 आधुनिक संदर्भों में तकनीकी संसाधनों को इस्तेमाल करते हुए हिंदी साहित्य की जानकारी देना|

2.12 प्रत्येक स्तर पर जीवन मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण करने की क्षमता और ज्ञान का विकास करना|

2.13 साहित्य के अध्ययन के द्वारा रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करते हुए नए मार्ग तलाशना|

2.14वर्तमान युग मीडिया क्रांति का युग है| देश में मीडिया की मुख्य भाषा हिंदी है| मीडिया के सभी रूपों में भाषा और रचनात्मकता से संबंधित रोजगारों के लिए विद्यार्थियों को सीखने और सजग करने में यह पाठ्यक्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा|

2.15 विद्यार्थी की रुचियों को एक व्यवस्थित रूप देना और उन्हें विभिन्न पाठ्यपत्रों में से चयन की स्वतंत्रता प्रदान करना ताकि वे स्नातकोत्तर कार्यक्रम के पूर्ण होने के बाद खुद ही विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों का चयन अपनी रूचि के अनुसार कर सकें|

शिक्षण अधिगम पद्धति

(Teaching Learning Method)

विद्यार्थियों को अध्यापन के दौरान हमेशा इस बात के लिए प्रेरित किया जाएगा कि वे विषय केंद्रित रहते हुए स्वाध्याय और शोध की प्रक्रिया से गुजरें ताकि उन्हें कुछ नया प्राप्त हो सके| विद्यार्थियों को इस बात के लिए भी प्रेरित किया जाएगा कि वे प्रतिदिन पाठ्यक्रम के किसी एक हिस्से को केंद्र में रखें| विषय की आधारभूत संरचना को जानने का प्रयास करें और यह भी समझने का प्रयास करें कि उस हिस्से का उसके जीवन, आजीविका से लेकर समाज, देश और विश्व के स्टार पर क्या उपयोगिता हो सकती है| शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में निर्णय आधारित दृष्टिकोण के बजाय प्रायोगिक प्रक्रिया पर आधारित दृष्टिकोण पर बल दिया जाएगा| निम्नलिखित पद्धतियों से पाठ्यक्रम का शिक्षण अपेक्षित है-

1 कक्षा व्याख्यान
2 संवाद एवं परिचर्चा
3 परिवेश का सृजन
4 अभिनय पद्धति का प्रयोग
5 अध्ययन से संबंधित शैक्षणिक भ्रमण
6 परियोजना कार्य
7 आईसीटी तकनीकी का सहयोग

मूल्यांकन पद्धति

(Evaluation System)

1 कार्यक्रम अधिगम परिणाम और पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम का संतुलन

एम. ए. हिन्दी के विद्यार्थियों की उपलब्धियों का मूल्यांकन निम्न प्रकार से किया जायेगा|

1. कार्यक्रम अधिगम परिणाम
2. पाठ्यक्रम अधिगम परिणाम

2 मूल्यांकन की प्राथमिकताएँ

अंत सत्र परीक्षा के आधार पर मूल्यांकन करने की बजाय सतत आंतरिक मूल्यांकन को प्राथमिकता दी जाएगी| सेमेस्टर परीक्षा के अंतर्गत आंतरिक मूल्यांकन, सतत मूल्यांकन और सत्र के अंत में ली जाने वाली परीक्षा शामिल होगी| आंतरिक मूल्यांकन के अंतर्गत कक्षा में आयोजित की जाने वाली मध्य सत्र परीक्षा, परियोजना कार्य एवं प्रस्तुति तथा कक्षा में उपस्थिति एवं भागीदारी आदि के अंक भी सम्मिलित किए जायेंगे| इस प्रकार से विद्यार्थी के मूल्यांकन की सतत प्रगति से अवगत हुआ जा सकेगा|

3 नवाचार और लचीलापन

अध्यापकों को सदैव नवाचार और लचीलापन अपनाने के लिए भी प्रेरित किया जाएगा ताकि अधिगम परिणाम से संबद्ध और रेखांकित किए गए बिंदुओं का सही अर्थों में उपयोग किया जा सके| मूल्यांकन से संबंधित सारे बिंदु स्पष्ट रूप से सभी विद्यार्थियों को संप्रेषित किए जाएंगे| यदि इसमें किसी प्रकार का संशोधन अथवा परिवर्तन किया जाता है तो उसकी भी यथासमय सूचना देने की व्यवस्था की जाएगी|

4 स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व

स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अत्यन्त आवश्यक है| वास्तव में यह अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना की कुंजी है, जो इसकी सफलता का निर्धारक तत्व भी है| उदाहरण के लिए शोध कार्य में शोधार्थी को अधिक से अधिक पुस्तकालय का उपयोग करने, साहित्य का सर्वेक्षण करने मौलिक आधारों को जानने, तार्किक और सृजनात्मक योग्यता का विकास करने आदि के लिए प्रेरित किया जाएगा| इस दृष्टि से नवाचार का होना अत्यंत आवश्यक है साथ ही इससे अध्ययन में और अध्यापन में पारदर्शिता बनी रहेगी|

5 गतिविधियों का समूहन और समायोजन

विभिन्न शैक्षणिक और सह-शैक्षणिक गतिविधियों को संपादित करने के लिए कुछ समूह बनाये जाएंगे और उन्हें समायोजित करते हुए उनके लिए प्रदत्त कार्य दिया जाएगा| इस क्रम में खुला साक्षात्कार, समूह चर्चा, एकल अथवा समूह प्रश्न सत्र, कक्षा प्रस्तुति, पुस्तकालय अथवा क्षेत्र विशेष का भ्रमण, टर्म पेपर, पोस्टर प्रस्तुतिकरण आदि सम्मिलित किए जाएंगे|ऐसा करते समय इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि शिक्षण अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना के उद्देश्यों की पूर्ति हो सके|

प्रथम सत्र			क्रेडिट –**18**	
पाठ्य पत्र कोड	**पाठ्यक्रम विवरण**	**Syllabus Detail**	**क्रेडिट**	
HIN-401	मध्यकालीन हिन्दी काव्य	Medieval Hindi Poetry	4	अनिवार्य
HIN-402	आधुनिक हिन्दी नाटक और अन्य गद्य विधाएं	Modern Hindi Drama & Other Prose Forms	4	अनिवार्य
HIN-421	क. हिन्दी कहानी	Hindi Short story	4	वैकल्पिक
HIN-425	ख. भक्तिकाव्य और कवि	Bhakti Poetry & Poets	4	वैकल्पिक
HIN-423	ग. हिन्दी पत्रकारिता	Hindi Journalism	4	वैकल्पिक
HIN-424	घ. प्रवासी हिन्दी साहित्य	Hindi Diaspora Literature	4	वैकल्पिक
प्रकल्प HIN-443	कंप्यूटर और हिन्दी अनुप्रयोग आधारित प्रकल्प	Computer & Hindi Application Based Projects	2	अनिवार्य

द्वितीय सत्र			क्रेडिट –**18**	
पाठ्य पत्र कोड	**पाठ्यक्रम विवरण**	**Syllabus Detail**	**क्रेडिट**	
HIN-451	आधुनिक हिन्दी काव्य	Modern Hindi Poetry	4	अनिवार्य
HIN-452	आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य	Modern Hindi Fiction	4	अनिवार्य
HIN-471	क. हिन्दी उपन्यास	Hindi Novel	4	वैकल्पिक
HIN-472	ख. नवजागरणकालीन साहित्य	Renaissance Literature	4	वैकल्पिक
HIN-473	ग. रेडियो, टी.वी. एवं वेब माध्यम	Radio, TV & Web Medium	4	वैकल्पिक
HIN-474	घ. गुजराती साहित्य	Gujarati Literature	4	वैकल्पिक
प्रकल्प HIN-493	व्यावसायिक अनुवाद अनुप्रयोग आधारित प्रकल्प	Commercial Translation Application Based Projects	2	अनिवार्य

तृतीय सत्र			क्रेडिट –**18**	
पाठ्य पत्र कोड	**पाठ्यक्रम विवरण**	**Syllabus Detail**	**क्रेडिट**	
HIN-501	भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा	Linguistics & Hindi Language	4	अनिवार्य
HIN-502	अस्मितामूलक साहित्य	Literature of Identity Discourse	4	अनिवार्य
HIN-521	क. हिन्दी नाटक एवं रंगमंच	Hindi Drama	4	वैकल्पिक
HIN-522	ख. छायावाद	Chhayavad	4	वैकल्पिक
HIN-523	ग. हिन्दी सिनेमा	Hindi Cinema	4	वैकल्पिक

HIN-525	घ. आधुनिक भारतीय साहित्य	Modern Indian Literature	4	वैकल्पिक
प्रकल्प HIN-543	पटकथा लेखन अनुप्रयोग आधारित प्रकल्प	Script Writing Application Based Projects	2	अनिवार्य

चतुर्थ सत्र			क्रेडिट –**18**	
पाठ्य पत्र कोड	**पाठ्यक्रम विवरण**	**Syllabus Detail**	**क्रेडिट**	
HIN-551	साहित्यशास्त्र	Literary Theory	4	अनिवार्य
HIN-552	प्रयोजनमूलक हिन्दी	Functional Hindi	4	अनिवार्य
HIN-571	क. हिन्दी आलोचना	Hindi Criticism	4	वैकल्पिक
HIN-572	ख. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता	Post-Independence Hindi Poem	4	वैकल्पिक
HIN-573	ग. अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग	Translation Theory & Application	4	वैकल्पिक
HIN-574	घ. तुलनात्मक साहित्य	Comparative Literature	4	वैकल्पिक
प्रकल्प HIN-593	शोध प्रविधि शोध पत्रलेखन	Research Methodology Writing Research Paper	2	अनिवार्य

नोट:1. प्रत्येक सत्र के वैकल्पिक पाठ्य-पत्रों (क,ख,ग,घ) में से किन्हीं दो का चयन विद्यार्थी कर सकते हैं।

2. अध्यापन एवं लिखित परीक्षा की भाषा हिन्दी होगी।

एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम मूल्यांकन प्रणाली

प्रत्येक पाठ्य पत्र के लिए 100 अंक निर्धारित हैं। जिनमें 50 अंक आंतरिक मूल्यांकन तथा शेष 50 अंक सत्रांत परीक्षा के लिए निर्धारित हैं। सत्रांत परीक्षा का प्रश्नपत्र दो घंटे का होगा। सत्रांत परीक्षा के प्रश्नपत्र का अंक विभाजन निम्नवत होगा है-

अंत सत्र परीक्षा के अंतर्गत अंक विभाजन पूर्णांक : 50 अंक

1. बहु विकल्पी 10 : 10 अंक
2. संक्षिप्त उत्तर 04 (विकल्प सहित) : 08 अंक
3. विस्तृत उत्तर 03 (विकल्प सहित) : 24 अंक
4. टिप्पणी/व्याख्या 02 (विकल्प सहित) : 08 अंक

आंतरिक मूल्यांकन के अंतर्गत अंक विभाजन पूर्णांक : 50 अंक

उपस्थिति और कक्षा में सहभागिता : 05 अंक
संगोष्ठी पत्र प्रस्तुति : 10 अंक
प्रदत्त कार्य : 10 अंक
मध्य सत्र लिखित परीक्षा :

1. बहु विकल्पी 05 : 05 अंक
2. संक्षिप्त उत्तर 05 (विकल्प सहित) : 10 अंक
3. विस्तृत उत्तर 02 (विकल्प सहित) : 10 अंक

प्रथम सत्र

अनिवार्य प्रश्नपत्र-1: मध्यकालीन काव्य (Medieval Hindi Poetry) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- विद्यार्थियों को आदि एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य के प्रतिनिधि कवियों और उनके काव्य से परिचित कराना।
- पाठ्य कृतियों के सन्दर्भ में काव्य एवं लोक भाषा के आस्वादन और समीक्षा की क्षमता बढ़ाना और साथ-साथ काव्य की प्रासंगिकता से परिचित कराना।
- भक्ति कविता के अखिल भारतीय स्वरुप से परिचय कराकर राष्ट्रीय बोध विकसित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (आउटकम)

- आदिकालीन-भक्तिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि, उसके वैचारिक आधार और स्वरूप को जान पाएंगे।
- भक्तिकालीन प्रतिनिधि कवियों और उनके काव्य से परिचित होंगे।
- पाठ्य कृतियों के सन्दर्भ में काव्य आस्वादन और समीक्षा की क्षमता को बढ़ा सकेंगे।
- रीतिकालीन प्रतिनिधि कवियों और उनके काव्य से परिचित हो सकेंगे।
- भक्तिकालीन और रीतिकालीन कविता की प्रासंगिकता से परिचित होंगे।
- सांगीतिक चेतना और गायन कौशल हेतु प्रेरित करना।

इकाई- 1.

आदिकालीन काव्य की पृष्ठभूमि और काव्य
भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि और उसका अखिल भारतीय स्वरूप
भक्ति काव्य का वैचारिक आधार
भक्ति काव्य की विभिन्न धाराएं एवं प्रवृत्तियां
भक्ति काव्य का सामाजिक आधार

इकाई- 2.

भक्तिकाव्य- निर्गुण धारा

जायसी (आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा सं. 'पद्मावत' से) **सिंहल द्वीप वर्णन खंड**- 1. सिंहल द्वीप कथा अब गावों..... सिंहल द्वीप समीप 2. जबहीं दीप नियरावा.....सदा बसंत 3. फरे आंब अति..... घन तार खजूर 4. राजसभा पुनि दीख ..... बाद परताप **नागमती वियोग खंड**- 1. नागमती चितउर पथ..... मोहि दिन्ह 2. पाट महादेइ हिये..... अद्रा पलुहंत 3. चढ़ा असाढ़ गगन..... सुख भुला सर्व 4. कुहुकी कुहुकी जस.....सुनी आवे कान्त।

कबीर (हजारी प्रसाद द्विवेदी कृत 'कबीर' से) **पद सं.** 33, 35 168, 215 और 249 **साखी सं.** 176, 220 222, 230, 231, 234, 241 और 256

इकाई- 3.

भक्तिकाव्य- सगुण धारा

सूरदास(आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा सं. 'भ्रमरगीत सार' से) 1. नीको रहियो जसुमति..... सन्देश न लीन्हो 2. आयो घोष बड़ो व्यापारी.... आनि दिखावे 3. हम तो बुंह.....जननी छार 4. हमारे हरि हरिल.... जिनके मन चकरी 5. निर्गुण कौन देश..... सबै मति नासी 6. प्रीती करि दीन्ही..... न बैठी डार 7. हरि हैं राजनीति .... जाय सताए 8. उधो तुम अपनी जतन..... अर्धजल जोग।

तुलसीदास ('कवितावली' से) 1. किसबी, किसान-कुल..... बड़ी है आगि पेटकी 2. जातिके, सुजातिके.....देखि-सुनी सो 2. खेती न किसानको.....तुलसी हहा करी 3. धूत कहौ, अवधूत....दैबेको दोऊ 4. पठयो है.....नन्दलालको 5.

मीरा (विश्वनाथ त्रिपाठी कृत मीरा का काव्य से)- 1. हे मा बड़ी बड़ी..... घर बसिके 2. माई संवारे .....रसीली जांची 3. माई री म्हा.....जणम की कोल 4. पग बांध घूंघरयां..... आस्यां री 5. राणाजी ठे जहर दियो.....अपणी जाणी 6. जोगी मत जा..... जोत मिला जा 7. साबरे मारया तीर ..... धरण णा धीर 8. आवत मोरी..... किसन मुरारी

इकाई- 4.

रीतिकालीन काव्य कीराजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

रीतिकालीन काव्य की विविध धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त)

देव (चयनित पद)- 1. सुनो पै परम .....एक बारही करै परी 2. डार द्रुम पलना.....गुलाब चटकारी दे 3. कथा मैं न कंथा..... परमेसर प्रतीति मैं 4. जब तें कुंवर..... बिलोकति बिकानी-सी 5. तेरो कह्यो करि करि .....मारौं एक बार 6. प्रेम गुन..... तरंग श्याम रंग की 7. झहरी झहरी झीनी.....दृगन में 8. सांसन ही सौं समीर ..... हरि जू हरि

बिहारी (चयनित पद)- 1. मेरी भव बाधा.....हरित दुति होई 2. अजौं तरयौना.....मुकुतनु कैं संग 3. पत्रा ही तिथि..... आनन ओप उजास 4. या अनुरागी चित्त की ..... उज्जलु होई 5. मोहन मुरती..... जग होइ 6. बेसरी मोती दुति..... पट पौछयों जाइ 7. बड़े न हुजै..... गहनौ गढ़यौ न जाइ 8. नहीं परागु नहीं..... कौन हवाल 9. अंग अंग नग..... उज्यारौगेह 10. चिलक, चिकनई, चटक..... डसी जाइ

घनानंद (चयनित पद)- 1. रावरे रूप की रीति.....हाथिनी हारियै 2. बिरह दवागिनी उठी..... सब ही हरै 3. राबरे गुननि बांधि..... परेखनी मूरति है 4. लहकी लहकी आवै..... रहियै ऊचे 5. दृग छाकत हैं छवि..... लाज थकै 6. जब तें निहारे..... तिन ही को ध्यान।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल,नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, मयूर प्रकाशन, नोएडा
3. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी काव्यधारा, राहुल सांकृत्यायन,बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
5. त्रिवेणी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
6. कबीर, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, मैनेजर पाण्डेय , वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. भारतीय प्रेमाख्यान की परंपरा, परशुराम चतुर्वेदी,भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
9. लोकवादी तुलसीदास, विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. बिहारी का नया मूल्यांकन, डॉ. बच्चन सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. कबीर : एक पुनर्मूल्यांकन, सं. बलदेव बंशी, आधार प्रकाशन पंचकुला, हरियाणा
12. भक्ति काव्य और लोकजीवन, शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. भक्ति आन्दोलन इतिहास और संस्कृति, कुंवरपाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. जायसी, विजयदेव नारायण साही, हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, इलाहाबाद
15. भक्ति काव्य का समाज दर्शन, प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
16. भक्ति काव्य यात्रा, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17. रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, डॉ. बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18. रीति काव्य की इतिहास दृष्टि, सुधीन्द्र कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
19. हिंदी साहित्य का रीतिकाल, डॉ. विनोद कुमार तनेजा, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकुला, हरियाणा
20. रीतिकाव्य, नन्दकिशोर नवल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
21. रीतिकाव्य के विविध आयाम,सुधीन्द्र कुमार, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
22. बिहारी अनुशीलन, सरोज गुप्ता, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली

अनिवार्य प्रश्नपत्र- 2 :आधुनिक हिन्दी नाटक एवं अन्य गद्य विधाएं

(Modern Hindi Drama & Other Prose Forms) **क्रेडिट 04**

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- हिन्दी नाटक और अन्य गद्य विधाओं से परिचित कराना।
- नाटक एवं अन्य गद्य विधाओं के आस्वादन और विश्लेषण की दृष्टि विकसित करना।
- नाट्य समूह का गठन, मंचन, अभिनय, संवाद, गायन हेतु प्रेरित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (आउटकम)

- हिंदी नाटक-एकांकियों के आस्वादन और समीक्षा की क्षमता बढ़ेगी।
- नाटकों की रंगमंचीयता की समझ विकसित होगी और रंगमंच के महत्त्व को रेखांकित कर पाएंगे।
- अन्य गद्य विधाओं की समीक्षा-विश्लेषण की क्षमता विकसित होगी।
- अन्य गद्य विधाओं के महत्त्व और आवश्यकता से परिचित हो सकेंगे।
- पारंपरिक जनसंचार माध्यम के रूप में नाटक के महत्व से परिचित हो सकेंगे।

- संदर्भित रचनाओं के माध्यम से सामजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय सरोकारों से परिचित हो सकेंगे।

इकाई- 1.

हिन्दी नाटक : विकास और प्रवृत्तियाँ
हिन्दी का कथेतर गद्य : स्वरूप और विकास

इकाई- 2.

नाटक – भारत दुर्दशा (भारतेंदु हरिश्चंद्र)
एकांकी– बादल की मृत्यु (राम कुमार वर्मा) स्ट्राईक (भुवनेश्वर), भोर का तारा (जगदीशचन्द्र माथुर)

इकाई- 3.

निबंध – शिवशंभु के चिट्ठे (बालमुकुंद गुप्त), लोभ और प्रीती (आचार्य रामचंद्र शुक्ल), साहित्य का उद्देश्य (प्रेमचंद), अशोक के फूल (आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी) प्रेमचंद के फटे जूते (हरिशंकर परसाई), राम का मुकुट भीग रहा है (विद्यानिवास मिश्र), उत्तरा फाल्गुनी के आसपास (कुबेरनाथ राय)

इकाई- 4.

अन्य गद्य विधाएं

यात्रा वृत्तान्त- मेरी तिब्बत यात्रा (राहुल सांकृत्यायन), चयनित अंश

संस्मरण- स्मृति की रेखाएं 'गुंगिया' (महादेवी वर्मा)

आत्मकथा-अपनी खबर (पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र) चयनित अंश

जीवनी- आवारा मसीहा (विष्णू प्रभाकर), चयनित अंश

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1. रंगदर्शन, नेमिचंद्र जैन, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली
2. हिंदी रंगमंच की भूमिका, लक्ष्मीनारायण लाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. साहित्यिक विधाएं : सैद्धांतिक पक्ष, डॉ. मधु धवन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. हिंदी गद्य : विन्यास और विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. आधुनिक गद्य की विविध विधाएं, उदयभानू सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. पारंपरिक भारतीय रंगमंच, कपिला वात्स्यायन, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
8. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
9. हिंदी नाटक उद्भव एवं विकास, डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
10. आधुनिक भारतीय रंगलोक, जयदेव तनेजा, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
11. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच,नेमिचन्द्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
12. आत्मकथा की संस्कृति और अपनी खबर, पंकज चतुर्वेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
13. भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच, सीताराम चतुर्वेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
14. हिंदी निबंध और निबंधकार, रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
15. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
16. हिंदी साहित्य का आधा इतिहास, सुमन राजे, ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
17. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां, नामवर सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18. हिंदी निबंध साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, बाबूराम, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
19. हिंदी नाटक के सौ साल, (दो भागों में) सं. महेश आनंद, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली
20. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र-क:हिन्दी कहानी (Hindi Short story) **क्रेडिट 04**

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- व्यावसायिक एवं रचनात्मक लेखन कौशल का विकास करना।
- कहानी विधा के तात्विक स्वरूप का परिचय देना।
- ऐतिहासिक विकास क्रम के परिप्रेक्ष्य में कहानी विशेष का महत्व समझाते हुए मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।
- कहानी के समाजशास्त्रीय अध्ययन के साक्ष्य के रूप से परिचित करना।

पाठ्यक्रम परिणाम (आउटकम)

- हिंदी कहानी के स्वरूप को समझ पाएंगे।
- हिंदी कहानियों की समीक्षा-मूल्यांकन की क्षमता विकसित होगी।
- एक विधा के रूप में कहानी के महत्त्व को रेखांकित कर सकेंगे।
- पठित कहानियों के आधार पर कथा लेखन की बारीकियों से परिचित हो पाएंगे।

इकाई 1.

कहानी : परिभाषा, स्वरूप एवं तत्व
हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

इकाई2.

स्वतन्त्रता पूर्व हिन्दी कहानी- ठाकुर का कुआँ (प्रेमचंद), ताई (विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'), पुरस्कार (जयशंकर प्रसाद), खुदाराम (पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'), पत्नी (जैनेन्द्र), दु:ख (यशपाल), शरणदाता (अज्ञेय)

इकाई3.

नई कहानी – मलबे का मालिक (मोहन राकेश), नीली झील (कमलेश्वर), बंद दराजों के साथ (मन्नू भंडारी), वांग्चु (भीष्म साहनी), रसप्रिया (फणीश्वरनाथ रेणु), कर्मनाशा की हार (शिवप्रसाद सिंह), डिप्टी कलेक्टरी (अमरकांत)

इकाई4.

समकालीन हिन्दी कहानी- अमरुद का पेड़ (ज्ञानरंजन), अपना रास्ता लो बाबा (काशीनाथ सिंह), मंजू फालतू (स्वयं प्रकाश), छप्पन तोले की करधन (उदयप्रकाश), कर्ज (मोहनदास नैमिशराय), रहोगी तुम वही (सुधा अरोड़ा), चिह्नार (मैत्रेयी पुष्पा)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कहानी नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हिंदी कहानी का इतिहास, गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिंदी कहानी का इतिहास, मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद
4. कहानी सन्दर्भ और प्रकृति, देवीशंकर अवस्थी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. कहानी का लोकतंत्र, पल्लव, आधार प्रकशन, पंचकूला, हरियाणा
6. कहानी : स्वरूप और संवेदना, राजेंद्र यादव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. कुछ कहानियां कुछ विचार, विश्वनाथप्रसाद त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. कहानी : समकालीन चुनौतियाँ, शम्भु गुप्त, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. कहानी के नये प्रतिमान, कुमार कृष्ण, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. समकालीन कहानी : नया परिप्रेक्ष्य, पुष्पपाल सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
11. कहानी : वस्तु, अंतर्वस्तु, शम्भु गुप्त, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
12. हिंदी कहानी : यथार्थवादी नजरिया, मार्कण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. हिंदी कहानी : प्रक्रिया और पाठ, सुरेन्द्र चौधरी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
14. समकालीन हिंदी कहानी में समाज संरचना, मोनिका हारित, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
15. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में मानव प्रतिमा, हेतु भारद्वाज, पंचशील प्रकाशन, जयपुर

16. कहानी का उत्तर समय : सृजन सन्दर्भ, पुष्पपाल सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
17. आधुनिक हिंदी कहानी, लक्ष्मीनारायण लाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. हिंदी कहानी : संरचना और संवेदना, डॉ. साधना शाह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
19. हिंदी कहानी : परम्परा और प्रगति, हरदयाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
20. इक्कीसवीं सदी का पहला दशक और हिंदी कहानी, सूरज पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
21. जनवादी कहानी : पृष्ठभूमि से पुनर्विचार तक, रमेश उपाध्याय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- ख: भक्तिकाव्य और कवि (Bhakti Poetry & Poets) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- भक्ति साहित्य की परिस्थितियों, प्रवृतियों एवं प्रतिनिधि रचनाकारों से परिचय कराना।
- पाठ्य कृतियों के सन्दर्भ में काव्य एवं लोक भाषा के आस्वादन और समीक्षा की क्षमता बढ़ाना और साथ-साथ काव्य की प्रासंगिकता से परिचित कराना।
- भक्ति कविता के अखिल भारतीय स्वरुप से परिचय कराकर राष्ट्रीय बोध विकसित करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि, अखिल भारतीय स्वरूप, उसके वैचारिक और सामाजिक आधार को समझ सकेंगे।
- भक्तिकालीन प्रतिनिधि कवियों और उनके काव्यगत विशिष्टताओं से परिचित होंगे।
- पाठ्य कृतियों के सन्दर्भ में काव्य आस्वादन और समीक्षा की क्षमता को बढ़ा सकेंगे।
- सांगीतिक चेतना और गायन कौशल हेतु प्रेरित करना।

इकाई- 1.

भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि
भक्ति काव्य का अखिल भारतीय स्वरूप
भक्ति काव्य का वैचारिक आधार
भक्ति काव्य का सामाजिक आधार (स्त्री, लोक, वर्ण व्यवस्था)

इकाई- 2.

भक्ति काव्य : संवेदना और प्रवृतियाँ
भक्ति काव्य : भाषा, संरचना और शिल्प
भक्ति काव्य : संगीत एवं विविध कलाओं से संबंध

इकाई-3.

निर्गुण भक्ति काव्यधारा
प्रमुख कवि : कबीर, रैदास,दादू दयाल, मुल्ला दाउद, जायसी,

इकाई- 4.

सगुण भक्ति काव्यधारा
प्रमुख कवि: सूरदास, नन्ददास, मीरा, तुलसीदास, रसखान, नरसी मेहता

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी साहित्य का भक्तिकालीन काव्य, डॉ. मनमोहन सहगल, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकुला, हरियाणा
2. हिंदी सगुण भक्ति काव्य के दार्शनिक स्रोत, रामचन्द्र देव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. हिन्दी काव्यधारा, राहुल सांकृत्यायन,बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
4. त्रिवेणी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
5. कबीर, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य, मैनेजर पाण्डेय , वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतीय प्रेमाख्यान की परंपरा, परशुराम चतुर्वेदी,भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
8. लोकवादी तुलसीदास, विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. बिहारी का नया मूल्यांकन, डॉ. बच्चन सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. कबीर : एक पुनर्मूल्यांकन, सं. बलदेव बंशी, आधार प्रकाशन पंचकुला, हरियाणा
11. भक्ति काव्य और लोकजीवन, शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. भक्ति आन्दोलन इतिहास और संस्कृति, कुंवरपाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

13. जायसी, विजयदेव नारायण साही, हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, इलाहाबाद
14. भक्ति काव्य का समाज दर्शन, प्रेमशंकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15. भक्ति काव्य यात्रा, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
16. मीरा का जीवन और समाज, माधव हाडा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
17. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, मयूर प्रकाशन, नोएडा
19. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
20. भक्ति का सन्दर्भ, देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र-ग: हिन्दी पत्रकारिता (Hindi Journalism) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक तथा पत्रकार की योग्यता विकसित करना।
- पत्रकारिता के विकास और महत्व से परिचित कराना।
- पत्रकारिता और मीडिया लेखन में सक्रिय भागीदारी हेतु सक्षम बनाना।
- पत्र-पत्रिकाओं हेतु सामग्री निर्माण, प्रूफ शोधन, पृष्ठ सज्जा एवं सम्पादन कौशल विकसित करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- पत्रकारिता के स्वरूप, महत्व, उसके प्रकार और उसकी आचार संहिता को समझ सकेंगे।
- हिंदी पत्रकारिता के उद्भव और विकास से परिचित होंगे।
- हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता, प्रमुख पत्रिकाओं और लघु पत्रिका आन्दोलन से परिचत हो सकेंगे।
- पत्रकारिता संबंधी लेखन, संकलन, प्रूफ शोधन, पृष्ठ सज्जा एवं सम्पादन कौशल सीख सकेंगे।

इकाई- 1.

पत्रकारिता : परिभाषा, स्वरूप, प्रकार, उद्देश्य, महत्व
पत्रकारिता का आरम्भ एवं विकास
पत्रकारिता संबंधी प्रमुख क़ानून तथा आचार संहिता

इकाई-2.

हिन्दी पत्रकारिता : उद्भव और विकास
स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी पत्रकारिता
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी पत्रकारिता

इकाई- 3.

हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता
स्वतन्त्रतापूर्व की प्रमुख साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ - कवि वचन सुधा,हिन्दी प्रदीप, सरस्वती, हंस
स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख साहित्यिक पत्र-पत्रिकाएँ–सारिका, धर्मयुग, दिनमान, नई कहानी, आलोचना, हंस, युद्धरत आम आदमी
लघु पत्रिका आन्दोलन

इकाई- 4.

पत्रकारिता संबंधी लेखन
समाचार संकलन, समाचार लेखन, संपादन, फीचर लेखन, आमुख, शीर्षक, आवरण कथा, साक्षात्कार, संपादकीय आदि
प्रस्तुति : प्रूफ शोधन, पृष्ठ विन्यास, चित्र, रेखाचित्र, कार्टून आदि

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी पत्रकारिता, डॉ. कृष्णबिहारी मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
2. पत्रकारिता : परिवेश और प्रवृत्तियां, डॉ. पृथ्वीराज पाण्डेय. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. पत्रकारिता के नये आयाम, एस. के. दुबे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. पत्रकारिता : नया दौर, नये प्रतिमान, संतोष भारतीय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

5. पत्रकारिता : नया मीडिया नये रुझान, शालिनी जोशी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
6. आधुनिक पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
7. हिंदी पत्रकारिता, डॉ. धीरेन्द्रनाथ सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. हिंदी पत्रकारिता, डॉ. अर्जुन तिवारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. पत्रकारिता का बदलता स्वरूप, डॉ. महासिंह पुनिया, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकुला, हरियाणा
10. हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और आयाम, राधेश्याम शर्मा,हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकुला, हरियाणा
11. सूचना प्रोद्योगिकी एवं पत्रकारिता, अशोक मलिक, हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकुला, हरियाणा
12. हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार, डॉ. ठाकुर दत्त आलोक, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. हिंदी पत्रकारिता : स्वरूप और सन्दर्भ, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. पत्रकारिता इतिहास और प्रश्न, कृष्ण बिहारी मिश्र,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15. पत्रकरिता के उत्तर आधुनिक चरण, कृपाशंकर चौबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
16. संचार क्रांति और हिंदी पत्रकारिता, डॉ. अशोक कुमार शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
17. हिंदी पत्रकारिता के नये प्रतिमान, बच्चन सिंह,विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
18. हिंदी पत्रकारिता और समाचार पत्रों की दुनिया, रत्नाकर पाण्डेय, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
19. हिंदी पत्रकारिता आधुनिक सन्दर्भ, देव प्रकाश मिश्र, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
20. पत्रकारिता के प्रश्न, राजेंद्र शंकर भट्ट,पंचशील प्रकाशन, जयपुर

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- घ:हिन्दी प्रवासी साहित्य(Diaspora Hindi Literature) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- विदेशों में भाषा एवं संस्कृतिकर्मी की भूमिका से अवगत कराना।
- प्रवासी साहित्य से परिचित कराना।
- चयनित रचनाओं के अध्ययन द्वारा प्रवासियों के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को समझाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- प्रवासी साहित्य की अवधारणा और उससे जुड़े हुए संदर्भों के सम्बन्ध में जानकारी दे सकेंगे।
- प्रवासी साहित्य के स्वरूप और विकास को समझ सकेंगे।
- प्रवासी साहित्य के चयनित पाठ्य कृतियों का मूल्यांकन और समीक्षा कर सकेंगे।
- प्रवासी साहित्य के माध्यम से प्रवासी जीवन सन्दर्भों को समझ सकेंगे।
- सांस्कृतिक अंतःक्रिया के साथ विश्व नागरिक की अपेक्षाओं को समझ सकेंगे।

इकाई– 1.

प्रवासी साहित्य की अवधारणा, स्वरूप और विकास
जलावतन, दासता, देशांतर गमन, बहुसांस्कृतिकता एवं नागरिकता, भूमंडलीकरण और प्रवासन, वतन और स्मृति, डायस्पोरा और भाषा

इकाई– 2.

हिन्दी प्रवासी साहित्य : स्वरूप एवं विकास

इकाई- 3.

लाल पसीना – अभिमन्यु अनत

इकाई– 4.

देशांतर – संपादक : तेजेंद्र शर्मा, हिन्दी साहित्य अकादमी, दिल्ली (चयनित कहानियां)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रवासी हिंदी कहानी : एक अंतर्यात्रा, सं. सुषमा आर्य- अजय नावरिया, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली

2. Anderson, Benedict (1982), *Imagined Communities Reflections on the Origin and Rise of Nationalism*, London: Verso.
3. Bammer, Angelika (ed.) (1994), *Displacements: cultural identities in question*, Bloomington: Indiana University Press.
4. Barkan, Elazar and Marie-Denise Shelton (eds.) (1998), *Borders, Exiles, Diasporas*, Stanford, California: Stanford University Press.
5. Brah, A. (1996), *Cartographies of Diasporas: Contesting Identities*, Routledge, London & New York
6. Braziel, Jana Evans and Anita Mannur (eds.) (2003), Theorising Diaspora A Reader, Malden: Blackwell Publishing Ltd.
7. Castles, S. and M. Miller (2009) *The Age of Migration: International Population Movements in the Modern World*, Palgrave Macmillan, New York.
8. Cohen, Robin, 2008, *Global Diasporas*, 2nd Edition, Taylor & Francis Ltd
9. Dubey, Ajay (ed.), 2003, *Indian Diaspora: Global Identity*. New Delhi: Kalin Publications.
10. Gurr, Andrew (1981), *Writers in Exile: The Identity of Home in Modern Literature*, Sussex: The Harvester Press.
11. Hall, Stuart et al. (eds.) (1992), *Modernity and its futures*, Cambridge: Polity Press in association with the Open University.
12. Jain, R .K. and Jasbir (eds.), 1998, *Writers of the Indian Diaspora*, Jaipur: Rawat Publications,
13. Jain, Ravindra K. (1993), *Indian Communities Abroad: Themes and Literature*,New Delhi: Manohar Publishers & Distributors.
14. Jayaram, N. (2004), *The Indian Diaspora*, Sage Publications India Pvt Ltd, New Delhi.
15. Jayaram, N. (2011), '*Diversities in the Indian Diaspora: Nature, Implications, Responses*', Oxford University Press
16. Kapur Devesh, 2010 *Diaspora, Development, and Democracy: The Domestic Impact of International on India,* Princeton University Press
17. Kim Knott and Seán McLoughlin (eds) *Diasporas: Concepts, Intersections, Identities*, Zed Books, 2010
18. Kishor, Giriraj (2010), *The Girmitiya Saga* (Translated by Prajapati Sah), New Delhi: Niyogi Books
19. Nelson, Emmanuel Sampath. *Reworlding: The Literature of The Indian Diaspora*. Greenwood Press, 1992.
20. Paranjape, Makarand (2002), *In Diaspora: Histories, Texts, Theories*, Delhi: Indialog.
21. Parekh, Bhikhu (2000), *Rethinking Multiculturalism*, London: Macmillan Press LTD.
22. Radhakrishnan, R. (1996), *Diasporic Mediations: Between Home and Location*, Minneapolis: University of Minnesota Press.
23. Radhakrishnan, R. (2007), *Between Identity and Location The Cultural Politics of Theory*, Hyderabad: Orient Longman Private Limited.
24. Rajan, Irudaya. S (ed.), 2011, *Dynamics of Indian Migration: Historical and Current Perspectives*. Routledge. New Delhi
25. Rushdie, Salman, 1991. *Imaginary Homelands: Essays and Criticism 1981-1991*
26. Sahay, Anjali (2009), *Indian Diaspora in the United States Brain Drain or Gain*? Lanham: Lexington Books
27. Sheffer, Gabriel, (1986) (ed.), *Modern Diasporas in International Politics*, London: Croom Helm.
28. Sheffer, Gabriel, 2003, *Diaspora Politics: At Home Abroad*. Cambridge University Press.
29. Varadarajan, Latha (2010), *The Domestic Abroad Diasporas in International Relations*, Oxford: Oxford University Press

प्रकल्प (Project)

उद्देश्य

- कंप्यूटर के विकास और महत्व की जानकारी कराना।
- आईसीटी प्रयुक्त शिक्षण की योग्यता अर्जित कराना।
- हिंदी कम्पोजिंग, सेटिंग, डिजाइनिंग, तकनीकी कौशल एवं कंप्यूटर की अन्य बारीकियों से अवगत कराना।
- हिन्दी में कंप्यूटर की व्यावहारिक उपयोगिता से अवगत कराना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- कंप्यूटर की कार्यप्रणाली के संबंध में जान सकेंगे।
- हिंदी अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से कंप्यूटर के उपयोग को समझ सकेंगे।
- इंटरनेट पर उपलब्ध ई-अध्ययन सामग्री का समुचित उपयोग कर सकेंगे।
- हिंदी संबंधी विभिन्न सॉफ्टवेयर का प्रयोग करना सीख सकेंगे।

क्रेडिट 02

कंप्यूटर और हिन्दी अनुप्रयोग पर आधारित प्रकल्प Computer & Hindi Application Based Projects	क्रेडिट 2	अनिवार्य

द्वितीय सत्र

अनिवार्य प्रश्नपत्र-3:आधुनिक हिन्दी काव्य (Modern Hindi Poetry) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियों और प्रतिनिधि रचनाकारों से परिचित कराना।
- व्यावसायिक एवं रचनात्मक काव्य लेखन की योग्यता विकसित करना। काव्य एवं गीत के आस्वादन एवं लेखन कौशल का विकास करना।
- पाठ्य कृतियों के सन्दर्भ में काव्य के आस्वादन और समीक्षा की क्षमता बढ़ाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- आधुनिक हिन्दी काव्य का परिचय और प्रवृत्तियों के बारे में जान पाएंगे।
- नई कविता और उसके बाद के दौर के विविध काव्यान्दोलनों को समझ पाएंगे।
- आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों के काव्य से परिचित हो सकेंगे।
- चयनित कविताओं का आस्वाद और विश्लेषण कर सकेंगे।
- सामाजिक सरोकार और व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में काव्य की भूमिका को समझ सकेंगे।
- कविता के माध्यम से लैंगिक समानता, पर्यावरण सजगता और मानवीय मूल्यों के प्रति सजग होंगे।

इकाई- 1.

आधुनिक हिन्दी काव्य का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ : भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अकविता, जनवादी कविता और समकालीन कविता

इकाई- 2.

जयशंकर प्रसाद – कामायनी का श्रृद्धा सर्ग
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला- राम की शक्तिपूजा

इकाई- 3.

नागार्जुन- प्रेत का बयान, अकाल और उसके बाद, गुलाबी चूड़ियाँ, कलामुद्दीन
अज्ञेय- नदी के द्वीप, बावरा अहेरी, कलगी बाजरे की
गजानन माधव मुक्तिबोध- ब्रह्मराक्षस, भूल गलती, एक अंतर्कथा

इकाई- 4.

रघुवीर सहाय- रामदास, हंसो हंसो जल्दी हंसो, तुमसे कहीं कुछ है
धूमिल- बीस साल बाद, अकाल दर्शन, मुनासिब कार्यवाही
केदारनाथ सिंह- आना, रोटी, बनारस, धानों का गीत

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रतिनिधि आधुनिक कवि, सं. डॉ. चन्द्र त्रिखा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला
2. आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां, सं. डॉ. चन्द्र त्रिखा, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला
3. कवियों की पृथ्वी, अरविन्द त्रिपाठी, आधार प्रकाशन पंचकुला, हरियाणा
4. आधुनिक हिंदी कविता का इतिहास, नंदकिशोर नवल, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
5. कविता का अर्थात, परमानन्द श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. छायावाद का रचनालोक, रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. कामायनी : एक पुनर्विचार, मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

8. कल्पना और छायावाद, केदारनाथ सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. छायावाद का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन, कुमार विमल, राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली
12. छायावाद युगीन साहित्यिक वाद विवाद, गोपाल प्रधान, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
13. छायावाद का प्रेमदर्शन, विजय लक्ष्मी, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
14. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
15. नई कविता और अस्तित्ववाद, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
16. साठोत्तरी कविता परिवर्तित दिशाएँ, विजय कुमार, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
17. समकालीन हिंदी कविता, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
18. फिलहाल, अशोक वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
19. समकालीन कविता का बीजगणित, कुमार कृष्ण, वाणी प्रकाशन दिल्ली
20. समकालीन कविता और सौंदर्य बोध, रोहिताश्व, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
21. कविता की जमीन और जमीन की कविता, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
22. कविता का आत्मपक्ष, एकांत श्रीवास्तव, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
23. कविता की संगत, विजय कुमार, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा
24. समकालीन कविता का बीजगणित, कृष्ण कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
25. आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान, केदारनाथ सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
26. नयी कविता का आत्मसंघर्ष, मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
27. कविता का उत्तर जीवन, परमानन्द श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
28. समकालीन हिंदी कविता की नई सोच, डॉ. पद्मजा घोरपड़े, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

अनिवार्य प्रश्नपत्र-4:आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य (Modern Hindi Fiction) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- व्यावसायिक एवं रचनात्मक कथा लेखन कौशल का विकास करना।
- कथा आस्वादन एवं समीक्षण से परिचित कराना।
- उपन्यास तथा कहानी विधा के तात्विक स्वरूप से परिचित कराना।
- उपन्यास तथा कहानी के ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- उपन्यास के तत्व, स्वरूप और विकास के बारे में जान पाएंगे।
- कहानी के तत्व, स्वरूप और विकास को बता पाएंगे।
- उन्यास और कहानी के इतिहास से परिचित होंगे।
- चयनित उपन्यासों और कहानियों का आस्वादन और विश्लेषण कर सकेंगे।
- कथा के माध्यम से लैंगिक समानता, पर्यावरण सजगता और मानवीय मूल्यों के प्रति सजग होंगे।
- व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में कथा साहित्य की भूमिका को समझ सकेंगे।

इकाई- 1.

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के विकास की पृष्ठभूमि

उपन्यास : उद्भव और विकास

कहानी : उद्भव और विकास

इकाई- 2.

उपन्यास - बाणभट्ट की आत्मकथा – हजारीप्रसाद द्विवेदी

इकाई- 3.

उपन्यास – मैला आंचल - फणीश्वरनाथ 'रेणु'

इकाई 4.

चयनित कहानियां –हेलिबेन की बतखें (अज्ञेय), जहाँ हसद नहीं (यशपाल), गदल (रांगेय राघव), परिंदे (निर्मल वर्मा), बदबू (शेखर जोशी), वापसी (उषा प्रियंवदा), सिक्का बादल गया (कृष्णा सोबती), सलाम, (ओमप्रकाश वाल्मीकि) कटघरे (सुमित्रा महरौल), बच्चे गवाह नहीं हो सकते (पंकज बिष्ट), सिरीउपमायोग (शिवमूर्ति)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपन्यास का इतिहास, गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. उपन्यास का काव्यशास्त्र, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. अधूरे साक्षात्कार, नेमिचंद्र जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. उपन्यास का उदय, ऑयन वाट (अनु. धर्मपाल सरीन), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला
5. कहानी नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. हिंदी कहानी का इतिहास, गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. हिंदी कहानी का इतिहास, मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद
8. उत्तर आधुनिकता और समकालीन कथा साहित्य, डॉ. लक्ष्मी गौतम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. हिंदी कथा साहित्य : एक दृष्टि, सत्यकेतु सांकृत, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10. बीसवीं शताब्दी का हिंदी साहित्य, विजयमोहन सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
11. हिंदी कथा साहित्य का इतिहास, हेतु भारद्वाज, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
12. उपन्यास और लोकजीवन, रैल्फ फॉक्स, पी.पी.एच., दिल्ली
13. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
14. आधुनिकता और हिंदी उपन्यास, इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
15. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
16. उपन्यास की संरचना, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
17. समकालीन हिंदी उपन्यास : समय से साक्षात्कार, विजय लक्ष्मी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
18. उपन्यासों के रचना प्रसंग, कुसुम वार्ष्णेय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
19. उपन्यास का पुनर्जन्म, परमानन्द श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
20. उपन्यास समय और संवेदना, विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
21. उपन्यास : स्थिति और गति, चन्द्रकांत बांदिवडेकर,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
22. समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष, डॉ. अर्जुन चव्हान,वाणी प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- क:हिन्दी उपन्यास (Hindi Novel) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- व्यावसायिक एवं रचनात्मक कथा लेखन कौशल का विकास करना।
- कथा आस्वादन एवं समीक्षण से परिचित कराना।
- उपन्यास विधा के उदय, विकास एवं तात्विक स्वरूप का परिचय देना तथा ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना विशेष का महत्व समझने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- उपन्यास के तत्व, स्वरूप और विकास के बारे में जान पाएंगे।
- व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में कथा साहित्य की भूमिका को समझ सकेंगे।
- उपन्यास का उदय, विकास और अन्य विधाओं से सम्बन्ध के बारे में जान पाएंगे।

- उपन्यास के माध्यम से लैंगिक समानता, पर्यावरण सजगता और मानवीय मूल्यों के प्रति सजग होंगे।
- व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में कथा साहित्य की भूमिका को समझ सकेंगे।

इकाई– 1.

उपन्यास : उदय और विकास
परिभाषा, तत्व, प्रकार, अन्य विधाओं से संबंध
हिन्दी उपन्यास का विकास
हिन्दी उपन्यास : विविध संदर्भ

इकाई-2.

शेखर एक जीवनी, भाग एक– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

इकाई-3.

राग दरबारी – श्रीलाल शुक्ल

इकाई- 4.

पचपन खंभे लाल दीवारें - उषा प्रियंवदा

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपन्यास का इतिहास, गोपालराय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. उपन्यास का काव्यशास्त्र, बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
3. अधूरे साक्षात्कार, नेमिचंद्र जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. उपन्यास का उदय, ऑयन वाट (अनु. धर्मपाल सरीन), हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकुला
5. उपन्यास और लोकजीवन, रैल्फ फॉक्स, पी.पी.एच., दिल्ली
6. उपन्यास और वर्चस्व की सत्ता, वीरेंद्र यादव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. आधुनिकता और हिंदी उपन्यास, इन्द्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
8. हिंदी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. उपन्यास की संरचना, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. समकालीन हिंदी उपन्यास : समय से साक्षात्कार, विजय लक्ष्मी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
11. उपन्यासों के रचना प्रसंग, कुसुम वार्ष्णेय, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
12. उपन्यास का पुनर्जन्म, परमानन्द श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. उपन्यास समय और संवेदना, विजय बहादुर सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. उपन्यास : स्थिति और गति, चन्द्रकांत बांदिवडेकर,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15. समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष, डॉ. अर्जुन चव्हाण,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
16. हिंदी उपन्यास, डॉ. रामचंद्र तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
17. हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में मूल्य संक्रमण, वेदप्रकाश अमिताभ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. समकालीन हिंदी उपन्यास : समय और संवेदना, सं. वी.के. अब्दुल जलील, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
19. समकालीन हिंदी उपन्यास, शशिभूषण सिंहल, हरियाणा ग्रंथ अकादेमी, पंचकुला
20. समकालीन हिंदी उपन्यास, सूरज पालीवाल, हरियाणा ग्रंथ अकादेमी, पंचकुला

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- ख: नवजागरणकालीन साहित्य (Renaissance Literature) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- विद्यार्थियों का नवजागरणकालीन पृष्ठभूमि एवं प्रवृत्तियों से परिचय कराना।
- राष्ट्रीय चेतना के निर्माण में नवजागरण की भूमिका से परिचित कराना।
- पाठ्य कृतियों के आस्वादन और विश्लेषण क्षमता को बढ़ाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- विद्यार्थी नवजागरण की अवधारणा, स्वरूप, विकास और विशेषताओं के बारे में जान पाएंगे।
- हिन्दी नवजागरण की प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित हो सकेंगे।
- नवजागरणकालीन साहित्य का अस्वादन और समीक्षा कर सकेंगे।
- समय, समाज और संस्कृति के संबंधों को समझ सकेंगे।

इकाई- 1.

नवजागरण : अवधारणा, स्वरूप, विकास, विशेषताएँ
पाश्चात्य नवजागरण की पृष्ठभूमि
भारतीय नवजागरण की पृष्ठभूमि
नवजागरणकालीन प्रमुख संस्थाओं का परिचय

इकाई- 2.

हिन्दी नवजागरण : प्रमुख प्रवृत्तियां
हिन्दी नवजागरण और भारतेंदु युग का साहित्य
हिंदी नवजागरण और द्विवेदी युग का साहित्य

इकाई- 3.

नाटक **:** वैदिक हिंसा हिंसा न भवति – भारतेंदु हरिश्चंद्र
निबंध : राधाचरण गोस्वामी के चयनित निबंध

इकाई– 4.

प्रिय प्रवास- अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रस्साकशी, वीर भारत तलवार, सारांश प्रकाशन, दिल्ली
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएं, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. नवजागरण, देशी स्वछंदतावाद और नई काव्यधारा, कृष्णदत्त पालीवाल,स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
5. हिंदी नवजागरण, डॉ. गजेन्द्र पाठक, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. हिंदी नवजागरण और जातीय गद्य परम्परा, कर्मेंदु शिशिर, आधार प्रकशन, पंचकूला, हरियाणा
7. हिंदी नवजागरण : राधाचरण गोस्वामी, सं. कर्मेंदु शिशिर, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
8. हिंदी और बंगला नवजागरण : भारतेंदु और बंकिमचन्द्र के निबंध, रूपा गुप्ता,स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
9. नवजागरण और हिंदी आलोचना, रमेश कुमार, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- ग : रेडियो, टीवी एवं वेब माध्यम (Radio, TV & Web medium) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- रेडियो, टीवी एवं वेब माध्यम के विकास और महत्त्व से परिचित कराना।
- रेडियो, टीवी एवं अन्य माध्यमों में रोजगार की योग्यता विकसित करना।
- मीडिया सामग्री का निर्माण एवं प्रबंधन करना।
- रेडियो, टीवी एवं वेब माध्यमों में प्रस्तुति कौशल विकसित करना।
- रेडियो, टीवी एवं वेब माध्यम में सक्रिय भागीदारी हेतु सक्षम बनाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- रेडियो, टी.वी और अन्य वेब माध्यमों के सम्बन्ध में जान पाएंगे।
- साहित्यिक कृतियों पर आधारित टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण और प्रस्तुतिकरण का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- वेब माध्यम के स्वरूप, प्रवृत्तियां और उसके विविध रूप (समाचार वेबसाईट, ब्लॉग, सोशल साईट्स) का परिचय पाएंगे।
- रेडियो, टी.वी. एवं वेबसाइट के लिए रचनात्मक लेखन एवं व्यावसायिक लेखन की जानकारी प्राप्त करेंगे।

इकाई- 1.

रेडियो का इतिहास

टी.वी. का इतिहास

वेब माध्यमों का परिचय

इकाई- 2.

टी.वी. सूचना एवं शिक्षण के माध्यम के रूप में

टी.वी. मनोरंजन के माध्यम के रूप में

साहित्यिक कृतियों पर आधारित टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण और प्रस्तुतीकरण.

कार्यक्रमों का अध्ययन (नीम का पेड़, तमस)

इकाई- 3.

इंटरनेट और वेब माध्यम

वेब माध्यम का स्वरूप और प्रवृत्तियां

वेब माध्यम के विविध रूप (समाचार वेबसाईट, ब्लॉग, सोशल साईट्स)

साहित्यिक वेबसाइटों का अध्ययन

वेबसाईट और तकनीक

इकाई- 4.

रेडियो, टी.वी. एवं वेबसाइट के लिए रचनात्मक लेखन

रेडियो, टी.वी. एवं वेबसाइट के लिए व्यावसायिक लेखन

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी वेब साहित्य, सुनील कुमार लवटे, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. संस्कृति विकास और संचार क्रांति, पी.सी. जोशी, ग्रंथशिल्पी, नई दिल्ली, 2001
3. मंडी में मीडिया, विनीत कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. साक्षात्कार व्यवहार और सिद्धांत, रामशरण जोशी, ग्रंथशिल्पी, नई दिल्ली
5. टेलीविजन : चुनौतियाँ और संभावनाएं, गौरीशंकर रैणा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. टेलीविजन समीक्षा : सिद्धांत और व्यवहार, सुधीश पचौरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. मीडिया का यथार्थ, डॉ. रतन कुमार पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. रेडियो का कला पक्ष, डॉ. नीरजा माधव, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
9. संप्रेषण और रेडियो शिल्प, विश्वनाथ पाण्डेय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. समाचार और संवाददाता, काशीनाथ गोविंद जोगलेकर, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
11. मीडिया लेखन : सिद्धांत और प्रयोग, मुकेश मानस, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
12. संचार माध्यम : तकनीक एवं लेखन, विजय कुलश्रेष्ठ, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
13. मीडिया, साहित्य और संस्कृति, माधव हाड़ा, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
14. टेलीविजन : निर्माण कला – विवेकानंद, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
15. भूमंडलीकरण बाजार और मीडिया - संपादक- जय नायारण बुधवार, प्रमिला बुधवार, स्वराज प्रकाशन
16. मीडिया, बाजार और लोकतंत्र - सं- पंकज बिष्ट, भूपेन सिंह, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
17. मीडिया, मिथ और समाज – रामशरण जोशी, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
18. भारत में जनसंचार और प्रसारण माध्यम - मधुकर लेले, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
19. मीडिया का अंडरवर्ल्ड- दिलीप मंडल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
20. न्यू मीडिया इंटरनेट की भाषायी चुनौतियाँ और संभावनाएं - आर. अनुरा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली धा
21. वेब पत्रकारिता : नया मीडिया, नए रुझान - शालिनी जोशी,शिवप्रसाद जोशी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
22. टेलीविजन लेखन - असगर वजाहत, प्रभात रंजन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
23. रेडियो नाटक की कला डॉ. सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
24. रेडियो वार्ता-शिल्प - डॉ. सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
25. टीआरपी टीवी न्यूज और बाजार - मुकेश कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
26. टेलीविजन की कहानी - डॉ. श्याम कश्यप, मुकेश कुमार, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- घ : गुजराती साहित्य (Gujarati Literature) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- तुलनात्मक अध्ययन एवं अनुवाद के क्षेत्र में योग्यता विकसित करना।
- गुजराती साहित्य के विकास और प्रवृत्तियों से परिचय कराना।
- चयनित रचनाओं के अध्ययन द्वारा गुजरात के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को समझाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- मध्यकालीन गुजराती साहित्य की पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में जान पाएंगे।
- आधुनिक गुजराती साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में जान पाएंगे।
- गुजराती साहित्य के साहित्यकारों से परिचित होंगे।
- गुजराती रचनाओं का आस्वादन और मूल्यांकन कर सकेंगे।
- हिंदी-गुजराती के तुलनात्मक ज्ञान के साथ-साथ अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार प्राप्त कर सकेंगे|

इकाई 1.

गुजराती साहित्य की संक्षिप्त पृष्ठभूमि
मध्यकालीन गुजराती साहित्य की प्रमुख प्रवृतियाँ : जैन साहित्य, प्रेम लक्षणा भक्ति साहित्य, आख्यान परम्परा, ज्ञानमार्गी साहित्य

इकाई 2.

आधुनिक गुजराती साहित्य की प्रमुख प्रवृतियाँ
सुधारक युग, पंडित युग, गांधी युग, आधुनिक युग, उत्तर आधुनिक युग

इकाई 3.

गुजराती साहित्यकार :
नर्मद, गोवर्धनराम त्रिपाठी, उमाशंकर जोशी, पन्नालाल पटेल

इकाई 4.

गुजराती रचनाएं :

महाप्रस्थान (उमाशंकर जोशी)
जीवी (पन्नालाल पटेल)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुजराती साहित्य का इतिहास, जयंतकृष्ण हरिकृष्ण दवे, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ
2. नवजागरणकालीन गुजराती साहित्य, सं. महावीर सिंह चौहान, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
3. भारतीय साहित्य- संपा. डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2013
4. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास- संपा. नगेन्द्र, हिन्दी कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, संस्करण 1989
5. भारतीय साहित्य- डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2008
6. भारतीय साहित्य : स्थापनाएं और प्रस्तावनाएँ, के. सच्चिदानंदन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतीय साहित्य, डॉ. आरसु, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
8. भारतीय साहित्य का सांस्कृतिक पक्ष, रोहिताश्व, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
9. आधुनिका भारतीय कविता, डॉ. नंदकिशोर पाण्डेय, अवधेश नारायण मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. भारतीय काव्य में सर्वधर्म समभाव, डॉ. नगेन्द्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. भारतीय काव्य विमर्श, राममूर्ति त्रिपाठी, वाणी प्रकशन, दिल्ली
12. गुजराती साहित्य का इतिहास, जयंकृष्ण हरिकृष्ण दवे, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ

13. शतदल (सौ श्रेष्ठ भारतीय कविताएँ), स्वयं कवियों द्वारा किया गया संकलन, भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता
14. चयनम (काव्य संकलन), सं. अरुण प्रकाश, साहित्य अकादेमी, दिल्ली
15. समकालीन गुजराती कविताएँ, चयन एवं हिंदी अनुवाद, साहित्य अकादेमी, दिल्ली

प्रकल्प (Project) क्रेडिट 02

उद्देश्य

- व्यावसायिक अनुवाद के स्वरूपप्रक्रिया और उसके महत्त्व से परिचित कराना।-
- व्यावसायिक अनुवाद की व्यावहारिक क्षमता और अनुवाद कौशल बढ़ाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- व्यावसायिक अनुवाद के स्वरूप और क्षेत्र की जानकारी होगी।
- व्यावसायिक अनुवाद की प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में जान पाएंगे।
- व्यावसायिक अनुवाद की आवश्यकता और महता को स्पष्ट कर सकेंगे।
- व्यावसायिक अनुवाद की क्षमता का विकास कर सकेंगे।

व्यावसायिक अनुवाद अनुप्रयोग पर आधारित प्रकल्प Professional Translation Application Based Projects	क्रेडिट 2	अनिवार्य

तृतीय सत्र

अनिवार्य प्रश्नपत्र-5: भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा (Linguistics & Hindi Language)क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- भाषा विज्ञान के माध्यम से सामाजिक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को समझने की योग्यता विकसित करना।
- भाषा विज्ञान के विविध पहलुओं से परिचित कराना।
- हिन्दी भाषा अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति से अवगत कराना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- भाषा विज्ञान की सैद्धांतिकी और भाषा परिवारों से परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
- भाषा विज्ञान की विविध शाखाओं से परिचय प्राप्त कर पाएंगे तथा भाषा अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धतियों को समझ सकेंगे।
- हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि के सम्बन्ध में जान पाएंगे।
- हिन्दी भाषा की संरचना, हिन्दी की ध्वनियाँ और उनके वर्गीकरण को समझ पाएंगे।
- भाषा विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र आदि के क्षेत्र में शोध में रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई- 1.

भाषा की परिभाषा एवं अभिलक्षण
भाषा विज्ञान स्वरूप और व्याप्ति
भाषा परिवार
भाषा की संरचना
भाषा और विचार

इकाई- 2.

ध्वनि विज्ञान
रूप विज्ञान
वाक्य विज्ञान
अर्थ विज्ञान

इकाई- 3.

हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
हिन्दी की उपभाषाएं (बोलियां)
भाषा और लिपि का संबंध
देवनागरी लिपि का मानकीकरण

इकाई- 4.

हिन्दी भाषा की संरचना
हिन्दी ध्वनियाँ और उनका वर्गीकरण
शब्द साधन, शब्द रचना, वाक्य विन्यास, विराम चिह्न

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भाषा और समाज, डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. भाषा विज्ञान की भूमिका, डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
3. हिन्दी भाषा का इतिहास, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
4. हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव,राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
5. आधुनिक भाषा विज्ञान, भोलानाथ तिवारी,वाणी प्रकाशन
6. One Language Two Script – Christopher King, Oxford University. Press, 1994
7. The Hindi Public Sphere (1920-1940) – Francheska Orsini, Oxford University Press 2002
8. भाषा और व्यवहार, बृजमोहन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. भारतीय भाषा विज्ञान, आ. किशोरीदास वाजपेयी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. भाषाई अस्मिता और हिंदी, रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. हिंदी : विविध व्यवहारों की भाषा, सुवास कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. हिंदी भाषा : इतिहास और स्वरूप, राजमणि शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. भारत की भाषाएँ एवं भाषिक एकता तथा हिंदी, महावीर सरन जैन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. भारत की भाषा समस्या, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
15. भाषा, भाषा विज्ञान और राजभाषा हिंदी, महेन्द्रनाथ दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
16. भाषा और व्यवहार, ब्रजमोहन,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
17. आधुनिक भाषा विज्ञान, राजमणि शर्मा,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. आधुनिक भाषा विज्ञान, कृपाशंकर सिंह-चतुर्भुज सहाय,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
19. हिंदी भाषा, महावीर प्रसाद द्विवेदी,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
20. हिंदी भाषा : अतीत से आज तक, विजय अग्रवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

अनिवार्य प्रश्नपत्र- 6:अस्मितामूलक साहित्य(Literature of Identity Discourse) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- अस्मितामूलक साहित्य की वैचारिकी से परिचय कराना।
- हाशिये के समूहों के प्रति संवेदना विकसित करना।
- अस्मितामूलक साहित्य के आस्वादन और विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- अस्मितामूलक हिन्दी साहित्य और उसकी अवधारणा से परिचित हो सकेंगे।
- अस्मितामूलक साहित्य का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकेंगे।

- अस्मितामूलक पाठ्य रचनाओं का आस्वाद और विश्लेषण कर सकेंगे।
- लैंगिक समानता, पर्यावरण सजगता और मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण की भावना का विकास होगा।

इकाई- 1.

अस्मितामूलक साहित्य की अवधारणा
अस्मिता का अर्थ
अस्मिता : व्यक्ति, समूह और राष्ट्र
अस्मिताओं के उभार के कारण

इकाई- 2.

दलित एवं आदिवासी लेखन
जूठन (आत्मकथा), ओमप्रकाश वाल्मीकि
चयनित कहानीकार-रामदयाल मुंडा, हरिराम मीणा, वाल्टर भेंगरा 'तरुण', शिवकुमार पाण्डेय, शेखर मल्लिक

इकाई- 3.

स्त्री लेखन
चयनित कहानीकार- कृष्णा सोबती, प्रभा खेतान, सुशीला टाकभौरे, गीतांजलिश्री

इकाई- 4.

अल्पसंख्यक संवेदनाजनित लेखन
चयनित कहानीकार- असगर वजाहत, नासिरा शर्मा, अब्दुल बिस्मिलाह, अनवर सुहैल

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
2. आधुनिकता के आईने में दलित, सं. अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र, शरणकुमार लिम्बाले, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. दलित साहित्य के प्रतिमान, डॉ. एन. सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. आदिवासी दुनिया, हरिराम मीणा, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
6. आदिवासी स्वर और नई शताब्दी, सं. रमणिका गुप्ता, वाणी प्रकाशन दिल्ली
7. आदिवासी साहित्य यात्रा, सं. रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
8. आदिवासी लेखन एक उभरती चेतना, रमणिका गुप्ता, सामयिक प्रकाशन नई दिल्ली
9. आदिवासी भाषा और शिक्षा, सं. रमणिका गुप्ता, स्वराज प्रकाशन दिल्ली
10. आदिवासी अस्मिता का संकट, रमणिका गुप्ता, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
11. खतरे अल्पसंख्यकवाद के, मुज्जफर हुसैन, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
12. सांप्रदायिक राजनीति : तथ्य एवं मिथक, राम पुनियानी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. स्त्री संघर्ष का इतिहास, राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. स्त्री मुक्ति का सपना, सं. कमलाप्रसाद, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
15. परिवार, निजी सम्पति और राजसत्ता की उत्पत्ति, फ्रेडरिक एंगेल्स, पी.पी.एच., दिल्ली
16. दलित साहित्य : अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
17. स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, रेखा कस्तवार, राधाकमल प्रकाशन, दिल्ली
18. विमर्श के विविध आयाम, अर्जुन चव्हान,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
19. यथास्थिति से टकराते हुए : दलित स्त्री जीवन से जुडी हुई आलोचना, सं. अनीता भारती-बजरंग बिहारी तिवारी, सम्यक प्रकाश, दिल्ली
20. हाशिये की वैचारिकी, सं. उमा शंकर चौधरी, अनामिका पब्लिशर्स, दिल्ली
21. दलित साहित्य का समाजशास्त्र, हरिनारायण ठाकुर, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- क : हिन्दी नाटक और रंगमंच(Hindi Drama) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- नाटक के स्वरूप, रचना-विधान और रंगमंचीय पक्ष से परिचित कराना।
- नाटक के अस्वादन और विश्लेषण की दृष्टि विकसित करना।
- नाट्य समूह का गठन एवं मंचन करने की योग्यता विकसित करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- नाटक के स्वरूप, तत्व और उसके महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- नाटकों की परम्परा से अवगत हो सकेंगे। ।
- नाटकों के आस्वादन, समीक्षा और विश्लेषण की क्षमता बढ़ेगी।
- नाटकों की रंगमंचीयता का महत्व समझ सकेगा और उसमें रंगमंचीय क्षमता विकसित होगी।
- अभिनय, संवाद, गायन, दृश्य योजना एवं रूपांतरण में करने की योग्यता विकसित होगी।

इकाई-1.

नाटक की परिभाषा और स्वरूप, नाटक के तत्व, नाटक का अन्य विधाओं से संबंध, नाटक का सामाजिक महत्व
नाटक तथा अन्य कलाओं का अंत:सम्बन्ध

इकाई-2.

नाटक की परम्परा
संस्कृत नाटक
पारसी नाटक
पाश्चात्य नाटक
हिन्दी नाटक

ध्रुवस्वामिनी - जयशंकर प्रसाद

इकाई–3.

रंगमंच की अवधारणा और प्रकार
रंगशिल्प, रंगभाषा,ध्वनि एवं संगीत (आहार्य, अलंकरण, वेशभूषा आदि)
लोकमंच और देशज संवेदना (रामलीला, रासलीला, स्वांग, भवाई, तमाशा आदि)
जनमंच और प्रतिरोध की संस्कृति (एकांकी/नुक्कड़ नाटक)
बिदेशिया- भिखारी ठाकुर

इकाई4.

अंधायुग - धर्मवीर भारती
आधे अधूरे - मोहन राकेश

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पारंपरिक भारतीय रंगमंच, कपिला वात्स्यायन, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
2. नाट्यभाषा, गोविंद चातक, तक्षशिला प्रकाशन
3. हिंदी नाटक उद्भव एवं विकास, डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस, दिल्ली
4. आधुनिक भारतीय रंगलोक, जयदेव तनेजा, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
5. आधुनिक हिंदी नाटक और रंगमंच,नेमिचन्द्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
6. रंगदर्शन, नेमिचन्द्र जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
7. हिंदी नाटक सिद्धांत और विवेचन, गोविन्द चातक, तक्षशिला प्रकाशन
8. भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच, सीताराम चतुर्वेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. अंतरंग बहिरंग - देवेन्द्रराज अंकुर, राजकमल प्रकाशन
10. हिंदी नाटक उद्भव एवं विकास, डॉ. दशरथ ओझा, राजपाल एंड संस
11. आधुनिक भारतीय रंग्लोक, जयदेव तनेजा, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
12. हिंदी नाटक : आज कल, तक्षशिला प्रकाशन
13. दूसरा नाट्यशास्त्र, देवेन्द्रराज अंकुर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. भारतीय एवं पाश्चात्य रंगमंच –सीताराम चतुर्वेदी, राजकमल प्रकाशन
15. नाट्यालोचना के सिद्धांत –सिद्धनाथ कुमार, वाणी प्रकाशन
16. हिंदी नाटक के सौ साल, दो भागों में, महेश आनंद, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली
17. हिंदी नाटक : विमर्श के विविध आयाम, ममता धवन, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
18. हिंदी रंगमंच की भूमिका, लक्ष्मीनारायण लाल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
19. हिंदी नाटक, बच्चन सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
20. हिंदी नाटक और रंगमंच, (सं.) राजमल बोरा,पंचशील प्रकाशन, जयपुर

वैकल्पिक प्रश्नपत्र-ख: छायावाद (Chhayavad) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियों और प्रतिनिधि रचनाकारों से परिचित कराना।
- व्यावसायिक एवं रचनात्मक काव्य लेखन की योग्यता विकसित करना।
- काव्य एवं गीत के आस्वादन एवं लेखन कौशल का विकास करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- आधुनिक हिन्दी काव्य का परिचय और प्रवृत्तियों के बारे में जान पाएंगे।
- छायावाद के दौर को समझ पाएंगे।
- आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों के काव्य से परिचित हो सकेंगे।
- चयनित कविताओं का आस्वाद और विश्लेषण कर सकेंगे।
- सामाजिक सरोकार और व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में काव्य की भूमिका को समझ सकेंगे।
- कविता के माध्यम से लैंगिक समानता, पर्यावरण सजगता और मानवीय मूल्यों के प्रति सजग होंगे।

इकाई- 1.

छायावाद की पृष्ठभूमि
छायावाद का स्वरूप
छायावाद की प्रवृतियाँ

इकाई- 2.

जयशंकर प्रसाद का जीवन दर्शन, समरसता और आनंदवाद, कामायनी में रूपक तत्व और कामायनी का आधुनिक सन्दर्भ
रचनाएँ- झरना, कामायनी (लज्जा सर्ग)

इकाई- 3.

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की कविता में प्रकृति एवं प्रगति चेतना, निराला के काव्य में विविध प्रयोग

रचनाएँ-सरोज स्मृति, स्नेह निर्झर बह गया, बादल राग, जूही की कली

इकाई- 4.

सुमित्रानंदन पन्त के काव्य में प्रकृति चित्रण, पन्त की सौन्दर्य चेतना और उनकी काव्य भाषा
रचनाएँ- परिवर्तन, नौका विहार, प्रथम रश्मि का आना रंगिणी, मौन निमंत्रण
महादेवी वर्मा के काव्य में रहस्यवाद, वेदना भाव, गीति तत्व, काव्य भाषा और बिम्ब विधान
रचनाएँ- मैं नीर भरी दुःख की बदली, सब बुझे दीपक जला लूँ, यह मंदिर का दीप, पूछता क्यों शेष कितनी रात, मधुर-मधुर मेरे दीपक जल, क्या पूजा क्या अर्चन रे

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. छायावाद का रचनालोक, रामदरश मिश्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. कामायनी : एक पुनर्विचार, मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. प्रसाद, निराला और पन्त छायावाद और उसकी वृहत्रयी, विजय बहादुर सिंह, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
4. छायावादयुगीन साहित्यिक वादविवाद, गोपाल प्रधान, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
5. कामायनी का पुनर्मुल्यांकन, रामस्वरूप चतुर्वेदी,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. कवि सुमित्रानंदन पन्त, नन्ददुलारे वाजपेयी,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. जयशंकर प्रसाद,नन्ददुलारे वाजपेयी,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. कवि निराला,नन्ददुलारे वाजपेयी,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. निराला काव्य की छवियाँ, नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. निराला का काव्य : विविध सन्दर्भ, मीरा श्रीवास्तव,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. निराला का काव्य, बच्चन सिंह, आधार प्रकाशन, पंचकुला
12. कल्पना और छायावाद, केदारनाथ सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. छायावाद, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
14. आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियां, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
15. छायावाद का सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन, कुमार विमल, राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली
16. छायावाद युगीन साहित्यिक वाद विवाद, गोपाल प्रधान, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
17. छायावाद का प्रेमदर्शन, विजय लक्ष्मी, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
18. जयशंकर : एक पुनर्मुल्यांकन, विनोद शाही,आधार प्रकाशन, पंचकुला
19. प्रसाद का काव्य, प्रेमशंकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
20. महादेवी, इंद्रनाथ मदान,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
21. महादेवी का नया मूल्यांकन, गणपति चन्द्र गुप्त,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
22. महादेवी, परमानन्द श्रीवास्तव,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
23. छायावाद के कवि : प्रसाद, निराला और पन्त, विजय बहादुर सिंह, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- ग : हिन्दी सिनेमा(Hindi Cinema) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- साहित्य एवं दृश्य-श्रव्य माध्यम के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- हिन्दी सिनेमा के इतिहास-विकास से परिचित कराना
- सिनेमा विधा के विविध रूपों से परिचित कराना।
- सिनेमा का आस्वादन और विश्लेषण की दृष्टि विकसित करना।
- सिनेमा में अभिनय, संवाद, गायन एवं अन्य तकनिकी पक्षों से परिचित कराना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- सिनेमा के स्वरूप और विकास को रेखांकित कर पाएंगे।
- साहित्य और सिनेमा के संबंधों को समझ सकेंगे।
- सिनेमा का मूल्यांकन कर सकेंगे।
- सिनेमा के लिए लेखन का कौशल बढा पाएंगे।

- सिनेमा के विविध में रोजगार को तलाश कर पाएंगे।

इकाई- 1.

सिनेमा : स्वरूप और विकास
हिन्दी सिनेमा का अतीत और वर्तमान (श्याम-श्वेत, रंगीन, वैश्विक सिनेमा)
जन माध्यम के रूप में सिनेमा
सिनेमा के विविध प्रकार – लोकप्रिय सिनेमा, कलात्मक एवं समानांतर सिनेमा, बाल सिनेमा, डॉक्युमेंट्री

इकाई- 2.

सिनेमा और समाज
सिनेमा और राजनीति
सिनेमा और संस्कृति
सिनेमा की भाषा एवं सम्प्रेषण

इकाई- 3.

साहित्य और सिनेमा
साहित्य और सिनेमा का अंत:सम्बन्ध
साहित्यिक रचना का सिनेमा में रूपांतरण- शतरंज के खिलाडी, तीसरी कसम, चित्रलेखा

इकाई- 4.

सिनेमा के लिए लेखन :
पटकथा लेखन
संवाद लेखन
गीत लेखन

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र, जवरीमल्ल पारख, ग्रंथशिल्पी, नई दिल्ली
2. पटकथा लेखन : एक परिचय, मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. शहर और सिनेमा : वाया दिल्ली, मिहिर पंड्या, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. फिल्मक्षेत्रे-रंगक्षेत्रे, अमृतलाल नागर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. कथा-पटकथा, मन्नू भंडारी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. सिनेमा और संस्कृति, राही मासूम 'रजा', वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. सिनेमा समकालीन सिनेमा, अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. सिनेमा : कल, आज, कल, विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. शहर और सिनेमा : वाया दिल्ली, मिहिर पंड्या,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. हिंदी सिनेमा का सच, सं. संभूनाथ,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. सिनेमा और संस्कृति – राही मासूम रजा, वाणी प्रकाशन
12. चलचित्र, कल और आज – सत्यजीत राय, राजपाल एंड संस
13. भारतीय सिने सिद्धांत – अनुपम ओझा, राधाकृष्ण प्रकाशन
14. लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ– जवरीमल पारख,अनामिका पब्लिशर्स
15. How to read a film – James Monaco, Oxford University Press
16. Ideology of Hindi Cinema – Madhav Prasad, Oxford University Press
17. हिंदी सिनेमा के सौ वर्ष – दिलचस्प, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
18. सिनेमा के सौ बरस - सं- मृत्युंजय, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
19. फिल्म का सौन्दर्य शास्त्र और भारतीय सिनेमा - सं- कमला प्रसाद, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
20. फीचर लेखन : स्वरुप और शिल्प - डॉ. मनोहर प्रभाकर, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
21. फिल्म निर्देशन - कुलदीप सिन्हा, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

22. नए दौर का नया सिनेमा – प्रियदर्शन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
23. सिनेमा के चार अध्याय - टी. शशिधरन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
24. अभेद आकाश(फिल्मकार मणिकौल से बातचीत) - उदयन बाजपेयी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
25. अपूत्रयी का दृश्य पाठ - सतीश बहादुर/श्यामला वनारसे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
26. मंडी में मीडिया - विनीत कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
27. पश्चिम और सिनेमा - दिनेश श्रीनेत, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र-घ: आधुनिक भारतीय साहित्य (Modern Indian Literature) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- भारतीय साहित्य की अवधारणा से परिचित कराना।
- चयनित रचनाओं के अध्ययन द्वारा भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन को समझना।
- साहित्य के माध्यम से भारतीयता का निर्माण करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- भारतीय साहित्य की अवधारणा और उसके अध्ययन की समस्याओं को रेखांकित कर पाएंगे।
- भारतीय साहित्य की श्रेष्ठ विधाओं का अस्वादन और विश्लेषण कर सकेंगे।
- साहित्य के माध्यम से भारत की भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता को समझ सकेंगे।
- भारतीय भाषाओँ एवं साहित्य में अनुवाद के महत्व को समझ सकेंगे।

इकाई 1.

भारतीय साहित्य की अवधारणा
भारतीय साहित्य का सामान्य परिचय
भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं

इकाई 2.

कन्नड़ नाटक- हयवदन, गिरीश कर्नाड

बांगला उपन्यास- गोरा, रवीन्द्रनाथ टैगोर

इकाई 3.

भारतीय कविताएँ- उर्दू, मलयालम, मराठी एवं पूर्वोत्तर भाषाओँ की चयनित कविताएँ

इकाई 4.

भारतीय कहानियां- तमिल, तेलुगू, मराठी, गुजराती, पंजाबी, असमिया एवं उड़िया भाषाओँ की चयनित कहानियां

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय साहित्य, सं. डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
2. भारतीय साहित्य, डॉ. रामछबीला त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास, सं. डॉ. नगेन्द्र, हिंदी माध्यम कार्यन्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
4. भारतीय उपन्यास की अवधारणा और स्वरूप, सं. आलोक गुप्त, राजपाल एंड संज, दिल्ली
5. भारतीय साहित्य : स्थापनाएं और प्रस्तावनाएँ, के. सच्चिदानंदन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

6. भारतीय लेखन में प्रतिरोध की परम्परा, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. भारतीय उपन्यास और आधुनिकता, वैभव सिंह, आधार प्रकाशन, पंचकूला, हरियाणा
8. भारतीय साहित्य, मूलचंद गौतम,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
9. भारतीय साहित्य, डॉ. आरसु,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएं, रामविलास शर्मा, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
11. भारतीय साहित्य की भूमिका, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
12. भारतीय उपन्यास की दिशाएं, सत्यकाम, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली
13. भारतीय साहित्य का सांस्कृतिक पक्ष, रोहिताश्व, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
14. चौदह भारतीय उपन्यास, तुलसी नारायण सिंह, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली

प्रकल्प (Project) **क्रेडिट 02**

उद्देश्य

- पटकथा लेखन के स्वरूप और उसके महत्त्व से परिचित कराना।
- पटकथा लेखन की क्षमता विकसित करना।
- विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकारों को पटकथा के माध्यम से प्रस्तुत करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- पटकथा लेखन के स्वरूप और उसके महत्व की जानकारी होगी।
- पटकथा लेखन की प्रक्रियाओं के सम्बन्ध में जान पाएंगे।
- पटकथा लेखन की क्षमता का विकास कर सकेंगे।
- दृश्य-श्रव्य माध्यम के क्षेत्र में रोजगार को तलाश कर पाएंगे।

पटकथा लेखन अनुप्रयोग आधारित प्रकल्प Script Writing Application Based Projects	क्रेडिट 2	अनिवार्य

चतुर्थ सत्र

अनिवार्य प्रश्नपत्र- 7: साहित्यशास्त्र (Literary Theory) **क्रेडिट 04**

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता का विकास करना।
- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विकासक्रम से परिचित कराना।
- साहित्य का आस्वादन एवं समीक्षात्मक दृष्टि विकसित करना।
- भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांतों से अवगत कराना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार और विभिन्न सिद्धांतों की जानकारी होगी।
- संस्कृत और हिन्दी के प्रमुख काव्यशास्त्रियों /आलोचकों की साहित्य विषयक मान्यताओं को समझ पाएंगे।
- पाश्चात्य विचारकों और उनके सिद्धांतों का मूल्यांकन-विश्लेषण कर सकेंगे।
- प्रमुख साहित्यिक वादों को समझ पाएंगे।

इकाई-1.

काव्य-लक्षण, काव्य-हेतु, काव्य-प्रयोजन, काव्य के प्रकार
अलंकार, रीति, वक्रोक्ति एवं औचित्य सिद्धांत का संक्षिप्त परिचय

इकाई- 2.

रस सिद्धांत : रस की अवधारणा, रस का स्वरूप, प्रमुख व्याख्याकार, रस निष्पति, रस के अंग
ध्वनि सिद्धांत- ध्वनि का स्वरूप, सिद्धांत और ध्वनि भेद

इकाई- 3.

अरस्तू– अनुकृति, त्रासदी और उसके तत्व, विरेचन
क्रोंचे – अभिव्यंजनावाद
आई. ए. रिचडर्स – मूल्य सिद्धांत, भाषा के विविध रूप
टी. एस. इलिएट – परम्परा और व्यक्तित्व का प्रश्न, वस्तुनिष्ठ समीकरण, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, क्लासिक और रोमांटिक

इकाई- 4.

हिन्दी के प्रमुख आलोचकों की साहित्य विषयक मान्यताओं का अध्ययन
रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी और रामविलास शर्मा
नई समीक्षा और प्रमुख साहित्यिक वाद

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. काव्यशास्त्र, भागीरथ मिश्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत, डॉ मैथिलीप्रसाद भारद्वाज, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
3. पाश्चात्य साहित्य चिंतन, निर्मला जैन, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, देवेन्द्रनाथ शर्मा, नेशनल पब्लिशिंग हॉउस, दिल्ली
5. संरचनावाद, उत्तरसंरचनावाद और प्राच्य काव्यशास्त्र, गोपीचंद नारंग, साहित्य अकादमी, दिल्ली
6. काव्य चिन्तन की पश्चिमी परंपरा, निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. रस सिद्धांत और सौंदर्यशास्त्र, निर्मला जैन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. भारतीय काव्य विमर्श, राममूर्ति त्रिपाठी,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
9. अथातो सौन्दर्य जिज्ञासा, रमेश कुंतल मेघ,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
10. भारतीय काव्यशास्त्र, तारकनाथ बाली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. पाश्चात्य काव्यशास्त्र, तारकनाथ बाली,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की पहचान, हरिमोहन,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. काव्यशास्त्र के मानदंड, रामनिवास गुप्त, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. हिंदी कव्यशात्र, डॉ. रामदेव शाहू, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
15. पाश्चात्य कव्यशात्र का इतिहास, डॉ. रामदेव शाहू, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
16. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ. बच्चन सिंह, हरियाणा ग्रंथ अकादेमी, पंचकुला
17. भारतीय काव्यशास्त्र, हरिश्चंद्र वर्मा,हरियाणा ग्रंथ अकादेमी, पंचकुला
18. भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, योगेन्द्र प्रताप सिंह, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
19. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत, गंपतिचंद्र गुप्त, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
20. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, रामचंद्र तिवारी,लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद

अनिवार्य प्रश्नपत्र- 8:प्रयोजनमूलक हिन्दी (Functional Hindi) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता का विकास करना।
- हिंदी भाषा के प्रयोजनपरक रूपों की दक्षता का विकास करना।
- हिन्दी भाषा के विविध प्रयोजनों और आयामों से परिचित करवाना।

- राजभाषा हिन्दी में कामकाज करने की दक्षता विकसित करना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा, स्वरूप, व्यवहार क्षेत्र को समझ सकेंगे।
- राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति से परिचित होंगे।
- हिंदी भाषा के प्रयोजनपरक रूपों की रोजगारपरकता के प्रति सजग होंगे।
- प्रशासकीय संप्रेषण में भाषा के विविध रूपों को जान-समझ पाएंगे।
- हिन्दी कम्प्यूटिंग, कार्यालयीन अनुवाद, पारिभाषिक और तकनिकी शब्दों से परिचित होंगे।

इकाई- 1.

स्वाधीनता आन्दोलन और हिन्दी
राष्ट्रभाषा, राजभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का विकास
प्रयोजनमूलक हिन्दी : अवधारणा, स्वरूप, व्यवहार क्षेत्र

इकाई- 2.

राजभाषा हिन्दी : संवैधानिक स्थिति
राजभाषा अधिनियम, प्रमुख धाराएँ, प्रावधान, निर्देशों की जानकारी
राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयास, सरकार के अधीन कार्यरत प्रमुख हिन्दी संस्थाएं

इकाई- 3.

प्रशासकीय संप्रेषण के विविध रूप
कार्यालयीन लेखन (शासकीय, अर्धशासकीय, व्यावसायिक और औपचारिक पत्र लेखन के प्रमुख प्रकारों का अध्ययन)

इकाई– 4.

अनुवाद भाषा
कार्यालयीन अनुवाद
कार्यालयीन अनुवाद : समस्याएं और संभावनाएं
लिप्यान्तरण की समस्याएं
पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली
हिंदी कम्प्यूटिंग

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रयोजनमूलक हिंदी, डॉ. रमेश तरुण, अशोक प्रकाशन, दिल्ली
2. सरकारी कार्यालयों में हिंदी प्रयोग, गोपीनाथ श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. कार्यालयीन हिंदी, डॉ. विजयपाल सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
4. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और व्यवहार, रघुनन्दनप्रसाद शर्मा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
5. प्रयोजनमूलक हिंदी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. प्रयोजनमूलक हिंदी : सिद्धांत और प्रयोग, दंगल झलते, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. प्रयोजनमूलक हिंदी की नई भूमिका, कैलाशनाथ पाण्डेय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. प्रयोजनमूलक हिंदी, माधव सोनटक्के,लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. प्रयोजनमूलक हिंदी : संरचना और अनुप्रयोग, डॉ. रामप्रकाश-डॉ. दिनेश गुप्त,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10. प्रयोजनमूलक हिंदी, राजनाथ भट्ट, हरियाणा ग्रंथ अकादेमी, पंचकुला
11. प्रयोजनमूलक हिंदी, कमला शंकर त्रिपाठी, उत्तरप्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- क : हिन्दी आलोचना (Hindi Criticism) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता का विकास करना।
- साहित्य के आस्वादन एवं समीक्षण की क्षमता का विकास करना।
- प्रमुख आलोचकों की अवधारणाओं और प्रतिमानों से परिचित कराना

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- हिंदी आलोचना की पृष्ठभूमि को समझ पाएंगे।
- हिन्दी के प्रमुख आलोचकों और उनकी आलोचना दृष्टियों को समझ पाएंगे।
- हिन्दी आलोचना की प्रकृति, प्रवृत्ति एवम् विकासक्रम से परिचित हो पाएंगे।
- साहित्यिक कृतियों का मूल्यांकन-विश्लेषण कर पाएंगे।

इकाई- 1.

हिन्दी आलोचना की पृष्ठभूमि, पूर्व शुक्ल युग की आलोचना, शुक्ल युग की आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल की आलोचना दृष्टि (कविता क्या है, काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था, रसात्मक बोध के विविध रूप, मानस की धर्मभूमि)

इकाई- 2.

शुक्लोत्तर आलोचना और आलोचक
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नन्ददुलारे वाजपेयी, डॉ. नगेन्द्र
प्रसाद और निराला की आलोचना दृष्टि

इकाई- 3.

प्रगतिशील आलोचना और आलोचक
शिवदान सिंह चौहान, रामविलास शर्मा, मुक्तिबोध, नामवर सिंह
परवर्ती प्रगतिशील आलोचना

इकाई- 4.

आधुनिकतावादी आलोचना और आलोचक
अज्ञेय, विजयदेवनारायण साही, धर्मवीर भारती, रामस्वरूप चतुर्वेदी

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिंदी आलोचना का विकास, मधुरेश, सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद
2. हिन्दी आलोचना का विकास, नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. हिन्दी आलोचना, विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. नई कविता और अस्तित्ववाद, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. आधुनिक हिन्दी काव्यालोचना के सौ वर्ष, प्रो. पुष्पिता अवस्थी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
7. आलोचना के नये मान, कर्ण सिंह, मैकमिलन प्रकाशन, दिल्ली
8. आलोचना की जमीन, विनोद शाही, आधार प्रकाशन पंचकुला, हरियाणा
9. आलोचना का जनतंत्र, देवेन्द्र चौबे, आधार प्रकाशन पंचकुला, हरियाणा
10. समकालीन हिन्दी आलोचना- संपा. परमानन्द श्रीवास्तव, साहित्य अकादमी, दिल्ली संस्करण प्रथम संस्करण 1998
11. आलोचक और आलोचना- कमला प्रसाद, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा
12. समकालीन आलोचना- संपा. वीरेंद्र सिंह, पंचशील प्रकाशन, जयपुर संस्करण 1989
13. आलोचक और आलोचना- देवीशंकर अवस्थी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. आलोचना की पहली किताब- विष्णु खरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15. आलोचना यात्रा- चंचल चौहान, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
16. हिंदी आलोचना : इतिहास और सिद्धांत- योगेन्द्र प्रताप सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
17. हिंदी आलोचना का सैद्धांतिक आधार- कृष्णदत्त पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. आलोचना और विचारधारा- नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
19. हिन्दी आलोचना का दूसरा पाठ- निर्मला जैन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
20. आलोचना के सौ बरस (तीन भागों में)- सं. अरविन्द त्रिपाठी, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली

प्रश्न पत्र-ख: स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता (Post-Independence Hindi Poem) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता विकसित करना।
- आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियों और प्रतिनिधि रचनाकारों से परिचित कराना।
- व्यावसायिक एवं रचनात्मक काव्य लेखन की योग्यता विकसित करना।
- काव्य एवं गीत के आस्वादन एवं लेखन कौशल का विकास करना।
- पाठ्य कृतियों के सन्दर्भ में काव्य के आस्वादन और समीक्षा की क्षमता बढ़ाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- आधुनिक हिन्दी काव्य का परिचय और प्रवृत्तियों के बारे में जान पाएंगे।
- नई कविता और उसके बाद के दौर के विविध काव्यान्दोलनों को समझ पाएंगे।
- आधुनिक हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों के काव्य से परिचित हो सकेंगे।
- चयनित कविताओं का आस्वाद और विश्लेषण कर सकेंगे।
- सामाजिक सरोकार और व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में काव्य की भूमिका को समझ सकेंगे।
- कविता के माध्यम से लैंगिक समानता, पर्यावरण सजगता और मानवीय मूल्यों के प्रति सजग होंगे।

इकाई- 1.

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि
स्वातंत्र्योत्तर काव्य आन्दोलन, कथ्य और शिल्पगत वैविध्य
उपलब्धि और सीमाएं

इकाई- 2.

नई कविता के प्रतिनिधि कवि और कविता
शमशेर बहादुर सिंह, त्रिलोचन, कुंवरनारायण, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, केदारनाथ सिंह

इकाई- 3.

विविध काव्यान्दोलन के प्रतिनिधि कवि और कविता
राजकमल चौधरी, कुमार विकल, ऋतुराज, लीलाधर जगूड़ी

इकाई- 4.

आठवें दशक के बाद की हिन्दी कविता के प्रतिनिधि कवि और कविता
चंद्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल, ओमप्रकाश वाल्मीकि, अरुण कमल, अनामिका

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कविता के नये प्रतिमान, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. नई कविता और अस्तित्ववाद, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. साठोत्तरी कविता परिवर्तित दिशाएँ, विजय कुमार, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
4. समकालीन हिंदी कविता, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली
5. फिलहाल, अशोक वाजपेयी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
6. समकालीन कविता का बीजगणित, कुमार कृष्ण, वाणी प्रकाशन दिल्ली
7. समकालीन कविता और सौंदर्य बोध, रोहिताश्व, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
8. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, नामवर सिंह,राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. कविता की जमीन और जमीन की कविता, नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
10. कविता का आत्मपक्ष, एकांत श्रीवास्तव, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
11. कविता की संगत, विजय कुमार, आधार प्रकाशन, पंचकुला, हरियाणा

12. समकालीन कविता का बीजगणित, कृष्ण कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान, केदारनाथ सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
14. नयी कविता का आत्मसंघर्ष, मुक्तिबोध, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
15. कविता का उत्तर जीवन, परमानन्द श्रीवास्तव, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
16. कविता के पक्ष में, (सं.) विश्वरंजन, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली
17. समकालीन हिंदी कविता की नई सोच, डॉ. पद्मजा घोरपड़े, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
18. एक कवि की नोटबुक, राजेश जोशी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
19. हिंदी कविता आधी शताब्दी, अजय तिवारी, साहित्य भंडार प्रकाशन, इलाहाबाद
20. समकालीन कविता के बारे में, नरेन्द्र मोहन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- ग :अनुवाद : सिद्धांत और प्रयोग (Translation Theory & Application)

क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता का विकास करना।
- अनुवाद कौशल का विकास करना।
- अनुवाद की मूलभूत विशेषताओं और उसके महत्व से परिचित कराना।
- अनुवाद के व्यवहारिक अभ्यास के द्वारा बेहतर अनुवाद करने की क्षमता बढ़ाना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- अनुवाद के स्वरूप, प्रक्रिया और क्षेत्र को रेखांकित कर पाएंगे।
- अनुवाद के प्रकार और उसकी कार्यप्रणाली के सम्बन्ध में बता पाएंगे।
- अनुवाद का मूल्यांकन और समस्याओं का विश्लेषण कर पाएंगे।
- अनुवाद की क्षमता बढा पाएंगे।
- अनुवाद सम्बन्धी रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।

इकाई- 1.

अनुवाद का स्वरूप, प्रक्रिया और क्षेत्र

अनुवाद का व्यापक सन्दर्भ, अनुवाद की प्रकृति– कला, विज्ञान

अनुवाद की इकाई -शब्द, पदबंध, वाक्य, पाठ

अनुवाद प्रक्रिया के तीन पक्ष – विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन

अनुवाद की तीन भूमिकाएँ – पाठक की भूमिका, द्विभाषिक की भूमिका, रचयिता की भूमिका स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा, अनुवाद की चिंतन परम्परा- भारतीय एवं पाश्चात्य

अनुवाद के क्षेत्र (साहित्य, वार्तालाप, पत्राचार, धर्म, न्यायालय, कार्यालय, शिक्षा, विज्ञान, प्रोद्योगिकी और संचार माध्यम आदि)

इकाई- 2.

अनुवाद के प्रकार और अनुवाद की योजनाएं

पाठानुवाद एवं आशु अनुवाद, लिप्यान्तरण, शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद,

मशीनी अनुवाद

इकाई- 3.

अनुवाद, पुनर्रीक्षण और मूल्यांकन

भाषिक, संरचनागत और शैलीगत, सांस्कृतिक शब्द, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे,

साहित्य एवं साहित्येतर अनुवाद की समस्याएँ

इकाई- 4.

अनुवाद प्रयोग, व्येतिरिकी विश्लेषण

भारतीय भाषाओँ अथवा अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद एवं हिन्दी से भारतीय भाषाओँ अथवा अंग्रेजी में अनुवाद

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत और अनुप्रयोग, सं. नगेन्द्र, हिंदी अध्ययन कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
2. अनुवाद के सिद्धांत : समस्याएं और समाधान, साचमुल्लू रामचंद्र रेड्डी, साहित्य अकादमी, दिल्ली
3. अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग, जी. गोपीनाथ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, सुरेश कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. अनुवाद और रचना का उत्तर जीवन, रमण सिन्हा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. अनुवाद प्रक्रिया और परिदृश्य, रीतारानी पालीवाल, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. अनुवाद विज्ञान, भोलानाथ तिवारी, प्रकाशक शब्दकार, दिल्ली
8. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएं, भोलानाथ तिवारी, प्रकाशक शब्दकार, दिल्ली
9. अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार - डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
10. अनुवाद के भाषिक पक्ष - विभा गुप्ता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
11. अनुवाद क्या है - राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
12. अनुवाद-कार्यदक्षता : भारतीय भाषओं की समस्याएँ - सं महेन्द्रनाथ दुबे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
13. भारतीय भाषाएँ और हिंदी अनुवाद समस्या समाधान - कैलाशचन्द्र भाटिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
14. बैंकिंग अनुवाद - ओम निश्चल/ गुमान सिंह, किताबघर प्रकाशन
15. अनुवाद : अवधारणा और विमर्श, श्रीनारायण समीर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
16. अनुवाद, तकनीक और समस्याएं, श्रीनारायण समीर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17. अनुवाद विज्ञान : सिद्धांत एवं प्रयोग, प्रो. राजमणि शर्मा, हरियाणा ग्रंथ अकादेमी, पंचकुला
18. अनुवाद सैद्धांतिकी, प्रदीप सक्सेना, आधार प्रकाशन, पंचकुला
19. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
20. राजभाषा हिंदी और तकनीकी अनुवाद, रमेशचंद्र, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली

वैकल्पिक प्रश्नपत्र- घ :तुलनात्मक साहित्य (Comparative Literature) क्रेडिट 04

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता का विकास करना।
- साहित्य एवं संस्कृति के तुलनात्मक विश्लेषण की क्षमता विकसित करना।
- तुलनात्मक साहित्य के इतिहास और परम्परा से अवगत कराना।
- तुलनात्मक साहित्य के सिद्धांतों और अध्ययन प्रविधि का आधारभूत ज्ञान कराना।

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- तुलनात्मक साहित्य के स्वरूप, क्षेत्र और महत्व को बता पाएंगे।
- भारतीय तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन की परम्परा और इतिहास को रेखांकित कर पाएंगे।
- तुलनात्मक साहित्य की रचनाओं का मूल्यांकन-विश्लेषण कर पाएंगे।
- तुलनामक अध्ययन की क्षमता को बढा पाएंगे।

इकाई- 1.

तुलनात्मक साहित्य **:** अर्थ, स्वतंत्र ज्ञान क्षेत्र के रूप में विकास, परिभाषा
तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप, क्षेत्र और महत्व
तुलनात्मक साहित्य के विविध संप्रदाय

इकाई- 2.

भारतीय तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन की परम्परा और इतिहास
तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की प्रविधि

इकाई- 3.

वस्तु बीज (थीमेटिक्स) दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन
दो रचनाएँ - मानव की अस्मिता, अस्तित्व का प्रश्न - नदी के द्वीप (अज्ञेय) और अमृता (रघुवीर चौधरी)

इकाई- 4.

गृहीत अध्ययन (रिसेप्शन स्टडी) की दृष्टि से अध्ययन

पौराणिक कथा /पात्र /घटना के आधार पर अध्ययन

रश्मिरथी (दिनकर), कर्ण-कुंती संवाद (टैगोर), कर्ण-कुंती (उमाशंकर जोशी)

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, इंद्रनाथ चौधरी, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
2. तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य, इन्द्रनाथ चौधरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
3. तुलनात्मक अध्ययन : भारतीय भाषाएँ और साहित्य, राजमल बोरा,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं समस्याएं, राजमल बोरा,वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. तुलनात्मक साहित्य, सं. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिकेशन हॉउस, दिल्ली
6. तुलनात्मक साहित्य सिद्धांत और समीक्षा, सं. महावीर सिंह चौहान, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर, गुजरात
7. Comparative literature theory and practice, editor-Amiya dev & Sisirkumar, Indian institute of advanced study, shimlaa

प्रकल्प **क्रेडिट 02**

उद्देश्य

- भाषा एवं साहित्य के शिक्षक की योग्यता का विकास करना।
- शोध कार्य के लिए प्रोत्साहित करना।
- शोध रूचि विकसित करना और उसके महत्व से परिचित कराना

अधिगम परिणाम (आउटकम)

- शोध के उद्देश्य और महत्व से परिचित हो सकेंगे।
- शोध की प्रविधि और प्रक्रिया से परिचित हो कर अच्छे शोधार्थी बन सकेंगे।
- प्रायोजित शोधकर्ता के माध्यम से रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।

शोध प्रविधि शोध पत्रलेखन Research Methodology Writing Research Paper	क्रेडिट 2	अनिवार्य

-